The E-JOURNAL on Gender Sensitization

अस्मि

Vol. 5 | Issue 01 | 2024-25

"Building Bridges, Breaking Barriers"

RAM LAL ANAND COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI
Benito Juarez Road, New Delhi-110021

Introduction

ASMI : The Gender Sensitization Committee of Ram Lal Anand College is pledged to make the students aware about gender related Issues and individual's rights irrespective of their gender identities. The name ASMI is significant in defining the aim of This society. The word ASMI means "I AM or I EXIST." Etymologically it comes from sanskrit dhaatopadh "AS" which means "TO EXIST." The Gender Sensitization Committee of RLAC runs with the motto that everyone's existence is significant in The same way as ours to us. It promotes the idea of inclusiveness and harmonious co-existence among each entity in the World for a better future. The members of ASMI organize various student centric activities such as performing Arts Competitions, Poster Making and Slogan Writings, Field Survey, Talks, Seminars, Conferences and Workshops on numerous aspects of gender issues. The society has started an e-Journal on Gender Sensitization for the students to give a creative Platform for their understanding of gender related issues. Our purpose is to make the students a better human being first. By focusing on the harsh realities which in general are swept beneath the carpet, students are enabled to question gender related concerns open-mindedly and discard the ills of antiquity. The various components of society consist of Gender Champions, Members and e-Journal Editors.

अस्मि : राम लाल आनंद महाविद्यालय की लिंग संवेदीकरण समिति विद्यार्थियों को लैंगिक मुद्दों और लैंगिक पहचान से परे व्यक्तिगत अधिकारों के बारे में जागरूक करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस समाज के उद्देश्य को परिभ. ाषित करने में अस्मि नाम महत्वपूर्ण है। अस्मि शब्द का अर्थ है "मैं हूं या मेरा अस्तित्व है।" व्युत्पत्ति की दृष्टि से यह संस्कृत के धातु पद "अस्" से आया है, जिसका अर्थ है-"अस्तित्व में होना।" आरएलएसी की अस्मि लिंग संवेदीकरण समिति इस आदर्श वाक्य के साथ चलता है कि हर किसी का अस्तित्व हमारे लिए उसी तरह महत्वपूर्ण है जैसे हमा. रा। यह बेहतर भविष्य के लिए दुनिया में प्रत्येक इकाई के बीच समावेशिता और सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व के विच. ार को बढ़ावा देता है। अस्मि के सदस्य कला प्रदर्शन प्रतियोगिता, पोस्टर बनाना और नारा लेखन, क्षेत्र सर्वेक्षण, वार्ता, सेमिनार, सम्मेलन और लैंगिक मुद्दों के कई पहलुओं पर कार्यशालाएं जैसी विभिन्न विद्यार्थी केंद्रित गतिविधियों का आयोजन करते हैं। अस्मि ने विद्यार्थियों के लिए लिंग संवेदीकरण पर एक ई-जर्नल शुरू किया है ताकि लैंगिक मुद्दों की उनकी समझ के लिए एक रचनात्मक मंच दिया जा सके। हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों को सबसे पहले एक बे. हतर इंसान बनाना है। कठोर वास्तविकताओं पर ध्यान केंद्रित करके, जिन्हें आम तौर पर कालीन के नीचे दबा दिया जाता है, विद्यार्थियों को लिंग संबंधी चिंताओं पर खुले दिमाग से सवाल उठाने और पुरातनता की बुराइयों को त्यागने में सक्षम बनाया जाता है। समाज के विभिन्न घटकों में जेंडर चैंपियंस, सदस्य और ई-जर्नल संपादक शामिल हैं।

Asmi Oath

We, the members of ASMI, are committed to promote Gender Equality among us. We pledge to devote ourselves in creating an inclusive, equal and just society through our idea, speech and conduct.

हम, अस्मि के सदस्य, अपने बीच लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम अपने विचार, भाषण और आचरण के माध्यम से एक समावेशी, समान और न्यायपूर्ण समाज बनाने में खुद को समर्पित करने की प्रतिज्ञा करते हैं।

Principles

- Equality समानता
- Liberty स्वतंत्रता
- Creativity रचनात्मकता

Aim & Objectives

- Behaviour according to the values of 'ASMI' in thought and language for establishing gender equality.

  लैंगिक समता की स्थापना के लिए विचार एवं भाषा में 'अस्मि' के मूल्यों के अनुसार आचरण।

- Spreading awareness towards gender equality in the social environment.

  सामाजिक परिवेश में लैंगिक समता के प्रति जागरूकता का प्रसार।

- Respect for diversity for social harmony.

  सामाजिक समरसता के लिए वैविध्य के प्रति आदर का भाव।

- Presenting an inspiring example through one's own behaviour and thinking for positive change.

  साकरात्मक बदलाव के लिए अपने व्यवहार और सोच से प्रेरक उदाहरण की प्रस्तुति।

- Creating inclusive opportunities for the quality of communication.

  संवाद की गुणवत्ता के लिए समावेशी अवसरों का सृजन।

- Demonstration of leadership and creative ability.

  नेतृत्व और रचनात्मक क्षमता का प्रदर्शन।

ASMI
The Gender Sensitization Committee
Ram Lal Anand College, Delhi University
Benito Juarez Marg, New Delhi- 110021

EDITORS
Prof. Shruti Anand
Ms. Deepshikha Kumari

STUDENT EDITORS
Aditi Kestwal
Ayush Prajapati
Sonika

LAYOUT & DESIGN
Ayush Prajapati

COVER PAGE
Palak Dayma

PATRON
Prof. Rakesh Kumar Gupta
Principal
Ram Lal Anand College, Delhi University

PUBLISHER
ASMI : The Gender Sensitization Committee
Ram Lal Anand College, Delhi University
7, Benito Juarej Marg, New Delhi-110067

Announcement

The purpose of this academic e-journal is social sensitization. Published articles are the personal thoughts of students. The articles are accompanied by images, caricatures, and cartoons sourced from various sources such as canva, google, goodreads and twitter, etc. This academic e-Journal content has been obtained from various competitions held throughout the session 2024-25. Writer's have been asked for permission before publishing their content.

इस अकादमिक ई-जर्नल का उद्देश्य सामाजिक संवेदनशीलता है। प्रकाशित लेख विद्यार्थियों के निजी विचार हैं। लेखों के साथ कैनवा, गूगल, गुडरीड्स और ट्विटर आदि जैसे विभिन्न स्रोतों से प्राप्त चित्र, कैरिकेचर और कार्टून भी हैं। इस अकादमिक ई-जर्नल की सामग्री सत्र 2024-25 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं से प्राप्त की गई है। लेखकों से उनकी सामग्री प्रकाशित करने से पहले अनुमति मांगी गई है।

ASMI
e-Journal of The Gender Sensitization Committee
Vol. 5 | Issue 01 | 2024-25

Contents

1. प्राचार्य की कलम से... 6
2. संपादकीय : *प्रो. श्रुति आनंद* 7
3. Editor's Note : *Ms. Deepshikha Kumari* 8
4. Student Editor : *Aditi Kestwal* 9
5. छात्र संपादक : *आयुष प्रजापति* 10
6. Towards Gender Neutrality 11
STITI AYONA
7. मगर तुम डटी रहना 12
शाम्भवी
8. The Disappeared Identity : A Short Thriller Towards Gender Neutrality 13
SHIVAM KUMAR SUNDERAM
9. हम चुप क्यो हैं ? 14
राधा बिश्नोई
10. Bridges, Not Walls 15
PALAK DAYMA
11. अपने खुद के 'मैं' को जानिए... 15
सोनिका
12. A Vision For Inclusive Society 16
DIVYA PANDEY
13. A Prayer for My Life and Death 17
ADITI KESTWAL
14. लैंगिक तटस्थता का वह दृष्टिकोण जो छुपा है 18
प्रियांशु शुक्ला
15. समाज : एक न्याय की दासता 19
लक्षित
16. A World for All 21
MANISH BHARDWAJ
17. एक खत पिता के नाम... 22
आशीष राज
18. यूं तो अकेला भी अक्सर गिर के संभल सकता हूं मैं... 23
न्यूटन कुशवाहा
19. सोचिएगा जरा... 24
अनुराग सुथार

20. Towards True Equality 24
MEHAK GOYAL
21. Epistolary Writing: From Amy Dunnes to Bertha Mason 25
KAJAL
22. इंसान ही सबसे बड़ी पहचान है 26
जया सिंह
23. क्या रोटी भी अंतर करती है? 26
नंदनी वार्ष्णेय
24. A Step Towards True Equality 27
DIVYA PANDEY
25. ये बेड़ियां कब तक बंधी रहेंगी ? 28
संजीव राज
26. पुरूष, महिला और ट्रांसजेंडर को समान दृष्टि से देखें 29
खुशी चौहान
29. Fostering Gender Sensitivity – It Begins With Us 31
YUMNA SAMIM
30. गांव की स्त्रियां 32
शाम्भवी
31. BREAKING THE BOUNDARIES 33
RIYA GUPTA
32. A World Where Everyone is Equal: The Power of Gender Equality 34
MANSI
33. हर क्षेत्र में भेदभाव का द्वेष झेलती महिलाएं 35
पुष्पेंद्र अहिरवार
34. Rising Like the Sun 37
LAKSHAY
35. Cover Designing Competition 38
36. ASMI Report 2024-25 39
37. ASMI Teacher's Member 42
38. E-Journal Editors 43
39. Gender Champion's 2024-25 43

ASMI
The Gender Sensitization Committee
Ram Lal Anand College, Delhi University
Benito Juarez Marg, New Delhi- 110021

प्राचार्य की कलम से...

प्रिय पाठकों,

अस्मि ई-जर्नल लैंगिक संवेदीकरण कमेटी का एक विशेष हिस्सा है। यह लैंगिक समानता, सशक्तिकरण एवं विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के प्रस्तावों के आलोक में बनी यह कमेटी विभिन्न स्तरों पर लैंगिक विसंगतियों को दूर करने की प्रेरणा, स्वतंत्रता, समानता एवं संवेदनीयता का प्रसार कर रही है। हमारा उद्देश्य इस समिति के माध्यम से विद्यार्थियों को एक बेहतर मनुष्य बनने में मदद करना है। अपने गठन के आरम्भिक वर्षों मे ही समिति ने यह वृहद कार्य बखूबी किया है । 'अस्मि' ई-जर्नल विद्यार्थियों को अपने आंतरिक शोध एवं अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करता है।

आशा है, भविष्य में यह जर्नल एक शोध जर्नल का रूप लेगा। पाठकों, ई-जर्नल के छात्र संपादकों एवं शिक्षक संपादकों को मेरी विशेष शुभकामनाएं और आभार !

प्रो. राकेश कुमार गुप्ता
प्राचार्य
राम लाल आनंद महाविद्यालय

संपादकीय

प्रो. श्रुति आनंद
संयोजक

प्रिय पाठकों,

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि अस्मि ई-जर्नल का वर्ष 2025 का अंक आपके समक्ष है। अस्मि राम लाल आनंद कॉलेज की लैंगिक-अस्मिता संवेदीकरण समिति का वार्षिक, रचनात्मक और वैचारिक प्रकल्प है। अस्मि समिति और ई-जर्नल दोनों का उद्देश्य महाविद्यालय के विद्यार्थियों में एक समतामूलक समाज की कामना उत्पन्न करना है ।

लैंगिक अस्मितामूलक विमर्श को विषय बना कर किए गए प्रयास और लिखी गई रचनाएं अक्सर प्रतिरोध से भरे हुए होते हैं। उनमें शोषण की पहचान होती है, करुणा होती है और होती हैं विरोध की आवाजें। इस प्रकार का प्रति. रोध दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है- एक, सत्ता में बराबर अधिकारों के अर्जन के लिए संघर्ष और दूसरा, पुरुषवर्चस्वकारी मानसिकता की खिलाफत। पहले संघर्ष की परिणति लैंगिक समानता और सशक्तिकरण के कानूनों के निर्माण में होती है। दूसरा संघर्ष आंतरिक होता है, यह समाज की सूक्ष्म व्यवहार रीतियों के विभाजनकारी रूपों की पहचान करता है और अत्यन्त जटिल होता है। इसलिए लैंगिक अस्मिताओं का प्रतिरोध हमेशा शोर नहीं मचाता, नारे ही नहीं लगाता वह समाज-परम्पराओं की नींव में छिपे विभेद को निर्मूल करने के लिए उसके सत्व, रज और तम का विश्लेषण भी करता है। एक संक्रमणशील समाज में सही और गलत की रेखाएं और भी धुंधली होती हैं। अतः ऐसे समाज के संघर्ष तनी हुई रस्सी पर चलने के समान होते हैं। अस्मि का लैंगिक समानता स्थापित करने का यह प्रयास भी एक तनी हुई रस्सी पर चलने जैसा है लेकिन मुझे खशी है कि अस्मि के सदस्यों ने इस बार इस तनी हुई रस्सी को एक पुल बना दिया जो इसकी राह के अवरोधों के ऊपर से समाज के पुनर्निर्माण को सहज बना देगा। युवाओं की रचनात्मकता और सुलझी हुई सोच हमारे भविष्य की उम्मीद है । मैं अस्मि के जेंडर चौंपियंस और छात्र संपादकों को बधाई देती हूं कि इस जर्नल के केंद्रीय विचार- *"Building Bridges, Breaking Barrier"* को उन्होंने इस रचनात्मक वैचारिक शक्ति से चरितार्थ किया।

अस्मि ई-जर्नल के लेखन, संपादन, पृष्ठ सज्जा, संकलन और प्रचार तक के सभी कार्य अस्मि के जेंडर चैंपियंस, संपादक मंडल और विभिन्न छात्र मिल करते हैं । एक तरह से यह पत्रिका अस्मि के मूल विचार का प्रतिनिधित्व करती है। अतः समिति का प्रत्येक सदस्य इस पत्रिका से किसी ना किसी रूप में संबंधित रहता है। फिर भी कुछ छात्रों का विशेष उल्लेख यहां आवश्यक है जिन्होंने संगठित होकर निस्वार्थ भाव, उत्साह और कर्मठता से अस्मि के लिए काम किया। जेंडर चैंपियंस- महक गोयल, अथर्व गंभीर, युमना शमीम, दिव्या पाण्डेय, छात्र संपादक मंडल - आयुष प्रजापति, अदिति केस्तवाल, सोनिका अन्य सदस्य- राहुल गुप्ता, पलक दायमा, अनुराग, हिमांशु, तुषार, भूमि, सलोनी और स्निग्धा । अस्मि आप सभी के मूल्यवान योगदान की सराहना करती है। मेरे साथी शिक्षक सदस्यों अस्मि की सह-संयोजक सुश्री दीपशिखा, वरिष्ठ सदस्य- प्रो. नीलम ऋषिकल्प, प्रो. सीमा जोशी, प्रो. राजीव कुमार, सुश्री मीन. ाक्षी ब्रह्मा, डॉ. ऋतु वत्स, सुश्री मेघा यादव को समिति की इस वर्ष की गतिविधियों के लिए विशेष धन्यवाद। प्राचार्य महोदय के संरक्षण और मार्गदर्शन के लिए आभार।

आपके पाठकीय विवेक और विनम्र आलोचना के आग्रह के साथ प्रस्तुत है अस्मि।

Editor's Note

Ms. Deepshikha Kumari
Co-convenor Editor

Dear Readers,

The deep roots of patriarchy have many rough edges, which are often invisible, and these complex, hidden layers of patriarchy affect our lives systematically, leading to a persistent gender divide. At the core of this oldest, most pervasive power dynamics lies a lopsided binary in which the man is placed at the center, and the woman is positioned on the periphery, constantly negotiating her space. Despite these challenges, women have resisted, reclaimed, and redefined societal roles, and the women's movement of the mid-20th century was a crucial step in this journey.

The Gender Sensitisation Committee of Ram Lal Anand College-ASMI publishes its annual e-journal to raise awareness and build sensitivity among students so they neither fall victim nor unknowingly perpetuate gender-based discrimination. More importantly, we aspire to inspire them to actively challenge and dismantle these rigid, often unacknowledged social hierarchies.

The theme for the current volume of our E-journal is *"Building Bridges, Breaking Barriers."* Through this, we strive to explore the various forms of gender gaps around us, both visible and hidden. The thrust has been recognising the areas of gender gaps where mainstream feminist discourse has faltered, particularly in exposing intersectionality. As Kimberlé Crenshaw aptly states, "If you can't see a problem, you can't fix it." In this session, the gender discourse at ASMI has tried to explore and incorporate the voices of Dalit, Adivasi, and transgender communities, whose struggles, though integral, are often marginalised within gender narratives.

ASMI e-journal is a modest yet sincere effort to bring attention to those invisible struggles tied to identity and belonging. With this objective, the e-journal is ready to be launched, and it gives me immense pleasure to present it to you all. I hope that this edition of our E-journal stimulates thought, dialogue, and a deeper commitment towards gender equality.

Student Editor

ADITI KESTWAL

Dear readers,

We are thrilled to have you join us for this journey into the 5th Edition of ASMI E-Journal. We thank you for your continued support in helping us not just spread the message of gender rights and equality, but for helping us change lives. With this edition, we hope to bring gender issues to you not as a set of problems that plague women or men, but rather a complex set of restraints that chain us all together regardless of our make. When we see each other, not as human first, but as our given sex, we limit not just other people's potential but also our own. The one who oppresses others too is oppressed by their own mindset that prevents them from progressing or embracing the brilliance of the human race. Thus liberty from gender discrimination can only be won when all of us are free from prejudiced hate. This fight for freedom, for rights and for equality is not a woman's alone, but for men and other genders too. The supposed need to differentiate gender constantly has resulted in Men and Transgender individuals being excluded from the protection of laws such as section 375. If we exclude all genders other than women in our fight, then it would be a false cause. We are not free until every last one of us is free, free from fear of gender based persecution.

When we adopt gender neutrality in our lives we open the door to possibilities as endless as the stars. We lose so many brilliant talents simply because they are born in the 'wrong gender' to pursue their gift. But with embracing gender equality we break the chains weighing us down so all of us can take to the skies and be the very best we can be. The road to a gender neutral world is a long one filled with many hurdles, but it is one worth taking. We must change the very language we use and demand for legal language to also use gender neutral pronouns so that justice is available for everyone. Through this issue of our e-Journal, we call on you to think beyond the binary. Inclusivity and diversity in our language, places and actions will make us stronger together. Together we will bridge the gap between the boxes that we have been imprisoned in and reach for a better tomorrow, a tomorrow where all of us are simply human.

छात्र संपादक

आयुष प्रजापति

21वीं सदी में कुछ मुद्दे ऐसे हैं जिन पर दुनिया भर में निरंतर चर्चाएं हो रही हैं। बावजूद इसके इनके कोई सार्थक परिणाम देखने को नहीं मिलते हैं। 'लैंगिक समानता' का मुद्दा भी इन्हीं में से एक है, जो तमाम कोशिशों के बावजूद यथावत् रूप से कायम है। पहली नजर में जो बात समझ में आती है, वह यह है कि लैंगिक भेदभाव किसी भी व्यक्ति के मन में यकायक उत्पन्न नहीं होता। यह समाजीकरण की उस निरंतर चलने वाली प्रक्रिया से ही जन्म लेता है, जो बाल्यकाल से ही आरंभ हो जाती है।

यह असमानता इंस्टा की रील भरी दुनिया से अलग है। विश्वभर की रपटें बताती हैं कि भाषा और विज्ञापन लैंगिक असमानता की अदृश्य बाधाएं हैं। दुनिया भर में कृषि क्षेत्र में आध ो से अधिक काम करने वाली महिलाएं हैं। कार्यस्थल पर एक चौथाई महिलाओं को ही काम करते पाया जाता है। ऐसी तमाम असमानताएं देखने को मिलती है। वह चाहे विज्ञान का क्षेत्र हो, राजनीति, फिल्म, खेल या फिर मीडिया, दफ्तर हो। यह बात बिल्कुल सच है कि जिस राष्ट्र ने अपने यहां लैंगिक समानता का संरक्षण किया है, उसने विकसित राष्ट्र के स्वप्न को साकार किया है। भारत भी विकसित राष्ट्र की यात्रा तय करने की ओर अग्रसर है।

लैंगिक असमानता से निपटने के लिए जरूरी है कि समाज की विचारधारा को परिवर्तित किया जाए, उन पूर्वाग्रहों को खंडित किया जाए जो स्त्री और पुरुष को दो अलग दायरों में समेटने का सिर्फ इसलिए प्रयास करते हैं, जिससे पितृसत्तात्मक व्यवस्था का अस्तित्व कायम रह सके। देश के बड़े सभागारों में मीटिंग होती है। संवाद, चर्चा, परिचर्चा, गोष्ठी होती है और स्थिति वही रहती है। ऑक्सीजन की तरह निगले शब्द कार्बन डाईऑक्साइड की तरह हवा में छोड़ दिए जाते हैं और गायब हो जाते हैं। ऐसे में सवाल यही उभर कर आता है कि कौन से कारण हैं कि तमाम प्रयासों के बाद भी लैंगिक असमानता समाप्त करने की दिशा में ज्यादा कुछ हासिल नहीं हो पा रहा है।

इस दिशा में राम लाल आनंद महाविद्यालय की अस्मि लैंगिक संवेदीकरण कमेटी नित नए दिन सार्थक काम कर रही है। विगत चार वर्षो से प्रकाशित हो रहा अस्मि का ई-जर्नल इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। अस्मि ई-जर्नल एक ऐसा मंच है, जहां यथार्थ, विचार और सृजनात्मकता मिलकर नए आयाम रचते हैं। इस वर्ष भी ई-जर्नल में विद्यार्थियों ने अपनी स्याही की कुछ बूंदो से इसे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। यह प्रयास उनकी रचन. ात्मकता, समझ, तर्क-वितर्क और सोच पर केन्द्रित है। लैंगिक रूढ़िवादिता को तोड़ने की दिशा में हमारा यह प्रयास निरंतर जारी हैं। परंतु इस सोच को गति तभी मिल सकती है जब हम और आप इस तरह की विचारधारा स्थापित करें, जहां पुरुष और स्त्री के मध्य असमानता उत्पन्न करने वाली दीवार अपना अस्तित्व कायम ना रख सके।

आपके समक्ष प्रस्तुत अस्मि ई-जर्नल का यह अंक 'लैंगिक तटस्थता' पर केन्द्रित है। ई-जर्नल के लेआउट और डिजाइन से लेकर पृष्ठ साज-सज्जा तक के सफर में समय समय पर अस्मि की संयोजिका संपादिका प्रो. श्रुति आनंद का मार्गदर्शन और सत् प्रेरणा हमारे लिए उत्साहवर्धक रही। मेरी साथी सोनिका और अदिति केस्तवाल को बधाई देता हूं जिनके प्रयास से यह ई-जर्नल अपना स्वरूप ले पाया है। हम आशा करते हैं कि इस अंक को आप सभी पाठकों का स्नेह प्राप्त होगा।

सभी को साधुवाद !

Towards Gender Neutrality

"Gender should not define who we are or limit what we can become."

In a world, that is no longer is willing no longer is willing to be boxed with restriction and limitations the idea of Gender neutrality is more than just a conversation- it is a revolution. It is a bold step towards a future where it is free from any limitation and the world works by one's ambition and skill.

The revolution of Gender neutrality sees the future where individuals were not given jobs based on their gender but by their interest, creativity and ambition. A revolution to break the old- centuries constraints and to live in a world where people wish to do what they love.

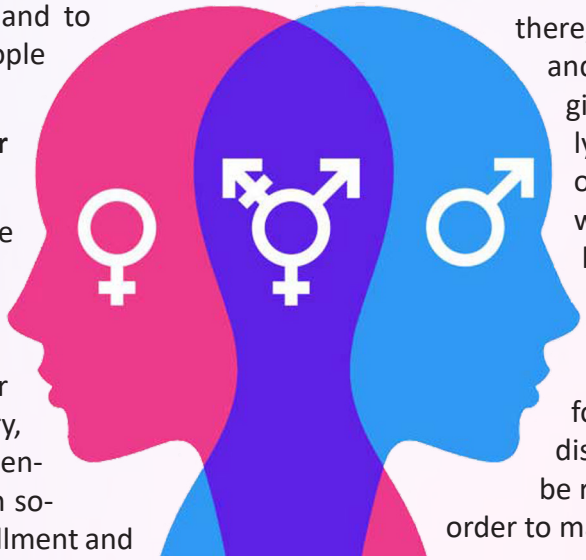

Understanding Gender Neutrality

Gender neutrality at its core means understanding the binary genders- male and female, and acknowledging the existence of other gender such as non-binary, gender fluid and agender identities. Everyone has a role in society that'd help in the upskillment and growth of the society and hence, no one should be restricted by any of the means. And to execute these it is necessary to carry out movements in education, public sphere, work places, religious places, legal frameworks etc.

Imagine waking up at 6am, getting your children ready, making food, taking care of the family and doing it all over again without any recognition or paycheck. This is the situation in our country right now. Gender Neutrality should start from home. The children from a young age are taught that men are supposed to be strong and bold and women should be soft and take care of the household whereas it can be vice-versa also. It has been printed on our minds that Boys should wear dark colours (Black, blue) and girls should be in Light (Pink). Some advertising companies have also taken this for segregating the products.

Gender Neutrality in public spheres should also be there. Public restrooms should also be made for non binary or gender-fluid people in movie theaters, Restaurants, Hotels etc.

In the Educational sector also the textbook shouldn't be gender biased and shouldn't mislead the students. For the other non-binary genders pronouns like they/them should be used to not make them feel discriminated against and the job titles like chairman should be replaced with chairperson.

In the workplace, equality should be there, like job and promotion and opportunities should be given to people who actually deserve it and not based on gender. The problem of whether period leave should be given to women or not is raising issues. In my opinion, for productive work the women must stay comfortable without any pain or discomfort. But there should be restricted to a certain limit in order to maintain equality.

Although, the society is working hard for the progress of Gender neutrality, there's still a lack of implementation. Today's youth are the torch bearers of tomorrow. It's us who can bring the change and go beyond Blue and Pink.

The rock cradles with boundless dreams,
Yet, Label eager what freedom means.
A boy must lead, a girl must bow,
But, why should fate still decide how?

STITI AYONA
Motilal Nehru College (Eve.)

मगर तुम डटी रहना

तुम्हारी परीक्षा मां की कोख से ही शुरू हो जाएगी,
जन्म के तुरंत बाद ही तुम्हारी अच्छाई तुम्हारे चेहरे से तौली जाएगी,
बढ़ती उम्र के हर पड़ाव पर तुम्हारा इम्तेहान होगा,
हो सकता है कि नुक्कड़ पर बैठे किसी मनचले के जुबां पर भी तुम्हारा नाम होगा,
तुम पर पड़ने वाली हर एक नजर अच्छी नहीं होगी,
हो सकता है किसी रिश्तेदार के नजरों में तुम बच्ची नहीं होगी,
बस खुद पर पड़ने वाली उन नजरों की समझ पूरी रखना,
परीक्षाएं बहुत होंगी मगर तुम डटी रहना।

रोक दिया जाएगा तुम्हें घर के बाहर निकलने से कभी,
रोक ली जाओगी तुम किसी चौराहे या फिर नुक्कड़ पे,
रोकने वालों की नियत को तुम बखूबी जानती होगी,
इसलिए तो, तेज डग भर हर बार नजरअंदाज कर आगे निकल जाती होगी,
जमाने में हर कोई खुद को तुम्हारा शुभचिंतक बताएगा,
मगर यकीं करोगी अगर तो तुम्हारी खुशियों को रौंदकर चला जाएगा,
पास आने की कोशिश करने वालों में तुम्हारे जिस्म की चाहत होगी,
कैसे पहचान पाओगी उस शख्स को जिसे तुमसे असल में मोहब्बत होगी?

घर की दहलीज कभी तुम्हारे जीवन की सबसे बड़ी बाधा होगी,
पार करना इतना मुश्किल होगा जैसे चौखट के उस पार किसी दूसरे देश की सीमा होगी,
और अगर उस दहलीज को पार करने की इजाजत तुम्हें मिल भी जाएगी,
तो भी बताओ एक छोटी सी चिड़ियां कहां तक पर फैलाएगी?

लेट होने पर तुम्हें डांटा फटकारा जाएगा,
हो सकता है तुम बेटी हो इस बात के लिए तुम्हें दुत्कारा जाएगा,
अगर मिलेगी कामयाबी तो उस पर भी सौ सवाल खड़े किए जाएंगें,
खूबसूरत है, कॉम्प्रोमाइज किया होगा, यह कहकर झूठे इल्जाम लगाए जाएंगे,
जिंदगी का इम्तेहान दिन-ब-दिन कठिन होता जाएगा,
फरेब की इस दुनिया से तुम्हारा विश्वास उठता जाएगा,
मगर तुम फिर भी हिम्मत बांधे रखना,
किसी और पर नहीं मगर खुद पर भरोसा पूरा रखना,
अपने सपनों के लिए तो सबको ही लड़ना होता है,
बस मेरी सलाह है कि तुम डटी रहना।

शाम्भवी
तृतीय वर्ष
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार

The Disappeared Identity: A Short Thriller Towards Gender

Scene 1: A newsroom studio: Disappearance

(A silently led newsroom, and news anchor appears).

News Anchor; "Breaking News! A young college student Aatar seems missing. No kidnapping ransom calls, no reason. Just missing… Is he kidnaped… but why- and what for? He Just disappeared!

(Camera fades, and Investing officer Mr. Roy is in front of the apartment. From outside, Roy examines everything intact- in the wardrobe- Half of it filled with ironed dresses of men and another half with girl's dress).

Mr. Roy *(Muttering)*: It seems to be a disappearance. But

whose...? Aatar... or anything else?

Scene 2: The secret revealed.

(Mr. Roy reached to Dr. Mehta, renowned psychiatrist and counsellor)

Mr. Roy: Dr. Mehta, had Aatar mentioned anything disturbing to you earlier?

Dr. Mehta *(with silence, nods his head):* Yes, a week ago, he came with another identity and name of Aditi.

Mr. Roy *(a bit of curiosity on face):* You means he was living

life of two persons?!

Dr. Mehta: Forced to live with it! A obedient and feared son - at home. And a freeAditi outside.

(a flashback happens, Aatav/Aditi seen standing in front of his father, wearing a dress of their own choice for the first time).

Scene 3: The Confession.

(Mr. Raj, father of Aditi/Aatar with chaotic and disturbing expression, filled with anger).

Ms. Raj: What the hell is this? You are my son… have to behave like that one.

Aditi/ Aasar (with firm): I am your child, not son. I had pretended a lot, but not anymore now!

(at that time, everything shattered! A mirror, A relation A heart! A lot).

Scene 4: The chosen Freedom.

(Mr. Roy, the investigator hurriedly reached back to Victim's apartment and looking for more information. Behind the mirror, found a chit with a message, "I am not disappearing, I just opted for freedom.")

(Camera fades out, and the next scene of a gathered, chaotic railway station is seens. Aditi / Aarav boarded the train, with confident dressing. They left the tensions behind, and the future unknown).

(on that day, Aatar died and it was reborn of original identity)

SHIVAM KUMAR SUNDERAM
Ram Lal Anand College

हम चुप क्यो हैं ?

लैंगिक तटस्थता एक ऐसा विषय है, जिस पर समाज में सामान्यतः चर्चा चलती रहती है। ये वाक्य सुनकर हमारे मन में सबसे पहले यही आता है कि महिलाओं के साथ भेदभाव न हो, उन्हें समाज में पुरूषों के समान दर्जा मिले। वे एक गरिमापूर्ण जीवन जिएं। समाज के हर क्षेत्र, चाहे वो राजनीतिक हो, प्रशासनिक हो या फिर आर्थिक क्षेत्र में भागीदारी हो। यदि हम थोड़ा गहराई से देखें तो पता चलेगा कि यह सिर्फ समाज में सबसे जाने पहचाने लिंग स्त्री पुरूष समानता की ही बात नहीं करता बल्कि अन्य जेंडर, जो न तो पूर्णतः स्त्री होते हैं और न पूरी तरह पुरूष। अपनी शारीरिक बनावट भावनाओं आदि के आधार पर भिन्नता की वजह से ये सामान्यतः थर्ड जेन्डर के नाम से जाने जाते हैं। चूंकि समाज में इनकी संख्या कम है। इसलिए इनकी ओर ज्यादा लोगों का ध्यान नहीं जाता। इसी कारण संसार की आधी आबादी अर्थात् स्त्रियों के साथ होने वाले भेद. भावों का उन्मूलन और उनकी समानता की बात ही की जाती है। संख्या के आधार पर हम थर्ड जेन्डर को देखकर भी तो अनदेखा नहीं कर सकते।

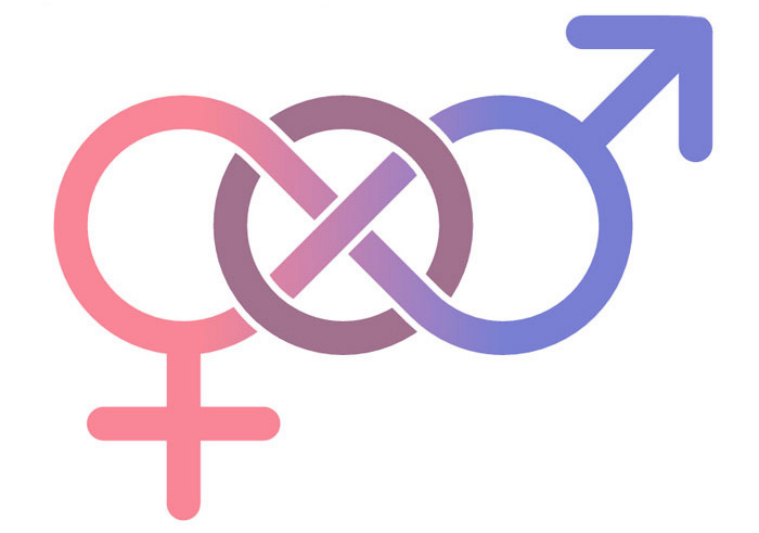

हमारे यहां अथवा कह सकते हैं सारे संसार में ऐसा क्यों होता है कि जब भी किसी एक क्षेत्र की, वर्ग की स्थिति सुधरती है, जब वह अपनी स्वर्णिम अवस्था में होती है तो कुछ समय बाद पूरी स्थिति बदल जाती है। वे अपने तथाकथित स्वर्णिम युग से अंधकार युग में आ जाती है। क्या इसे हम परिवर्तन मान लें कि परिवर्तन जीवन का अथवा युग का पहलू है। परंतु ऐसा मानकर स्थितियों को स्वीकार करना तो वास्तविकता से मुंह कर लेना होगा। अगर वास्तव में हम एक इंसान है तो हमें यह सोचना चाहिए कि ये परिवर्तन केवल स्त्रियों अथवा समाज के दबे कुचले लोगों के साथ ही क्यों होता है? उन्हीं का स्वर्णिम युग जो किसी कारणवश आ गया था, खत्म क्यों होता है?

पुरूषों का स्वर्णिम युग जो सभ्यता के प्रारंभ से चला आ रहा है, वो अब जब सभ्यता अपने अंत की ओर जा रही है। समाप्त क्यों नहीं होता? वैदिक युग से मध्ययुग के रूपांतरण के साथ स्त्रियों की दशा ही क्यों बदली, पुरूषों का वर्चस्व तो नहीं बदला?

ये पुरूषों का वर्चस्व या स्त्रियों की दशा तभी बदलेगी जब समाज का हरेक युवक इन प्रश्नों से होकर गुजरेगा। जब लोगों को वास्तव में शिक्षा मिलेगी। जब ग्रामीण लोगो की आवश्यकताएं पूरी होगी और इसके लिए हम बुनियादी शब्द का इस्तेमाल नहीं करेंगे। परंतु चिंता का विषय यह है कि ये सब वास्तविक धरातल पर कभी होगा अथवा हम ऐसे ही दिवास्वप्न देखते ही रह जाएंगें।

ये बड़ी ही विडंबना की बात है कि विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, विश्वगुरु एवं बहु-सांस्कृतिक और दुनिया की दूसरी सबसे अधिक जनसंख्या वाल देश भारत आज अपनी आधी आबादी की रक्षा करने में असफल है। दूसरों देशों के आक्रमण से वह अपनी रक्षा कर सकता है परंतु अपने ही लोगों द्वारा फैलाई जाने वाली असुरक्षा से अपने ही लोगों की रक्षा नहीं कर सकता।

जब देश में निर्भया हत्याकांड जैसी घटनाएं होती हैं। कोलकाता केस जैसी अमानवीय घटनाएं घटित होती हैं तब सब चुप क्यों होते हैं। पूरी निष्ठा से मामले की जांच नहीं की जाती कि कहीं हमारा नाम बदनाम न हो जाए। देश के तथाकथित नेता लोग ही जब कुछ नहीं बोलेगें तो जनता क्या बोलेगी। जैसा राज्य वैसी प्रजा। वही यदि किसी नेता के घर से छोटी सी चोरी भी हो जाए तो हंगामा मच जाएगा। मीडिया उसी तरफ लग जाएगी। वही मीडिया जब किसी का बलात्कार होता है तो चुप्पी छाप साध लेती है। इस पर अप्रत्यक्ष रूप से सब यही कहते हैं - "होने दो ठीक हो रहा है।" पुरूष जाति का नाम खराब नहीं होना चाहिए और वही लोग जब लैंगिक समानता, मानवाधिकार जैसी बात करते हैं तो पता चलता है कि मनुष्य के कितने चेहरे होते हैं।

राजनीति में स्त्रियों को समान अधिकार का बिल पास कर छोटे बच्चों की तरह उन्होंने बहलाया जाता है। अगर देना ही है तो बिल को लागू क्यों नहीं किया गया। परंतु आशा है कि आने वाले दिनों में ये बिल, जो महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण की बात करता है। जल्द ही लागू किया जाएगा और जब महिलायें स्वयं राजनीति में आएंगी तो अपनी और अपने जैसी की स्थिति सुधारेंगी, क्योंकि पुरूषों द्वारा संचालित सत्ता को तो उन्होंने देख ही लिया है जब हम लिंग के आधार पर व्यवहार करना बंद करेंगें तभी हम वास्तव में भारतीय कहलाएंगे।

राधा बिश्नोई
मोती लाल नेहरू महाविद्यालय

Bridges, Not Walls

Let's build bridges, not divide,
Walk with justice, side by side.
Hand in hand, the path is bright,
Lit with love and equal light.
The walls we built, the lines we drew,
Separate me, separate you.
But bridges rise, when hearts align,
Across all borders, yours and mine.
In unity, we'll stand so tall,
Together we will break the wall.
No more hate, no more divide,
Only justice as our guide.
So build with care, build with grace,
For every life, every face.
Hand in hand, we shall be free,
A world where all can simply be.

PALAK DAYMA
BA (H) English
Ram Lal Anand College

अपने खुद के 'मैं' को जानिए...

कितना छोटा सा शब्द है। इसी छोटे से शब्द से अस्ति. त्व का एहसास होता है। किसी के होने की पहचान बनती है। यह मैं, किसी को अपनी आवाज उठाने का मौका देता है तो किसी को अपनी ताकत का एहसास दिलाता है। जरूरी नहीं इस मैं की पहचान हो, बल्कि यह खुद पहचान बनाता है। इसे एक या दो लैंगिक अस्तित्व के साथ जोड़ देना सही नहीं है, क्योंकि इसका अर्थ इन सबसे परे है।

लैंगिक समानता के नजरिए से 'मैं' की अवधारणा और अर्थ को समझना जरूरी हो जाता है। 'मैं' हर उस प्रश्न की नींव रखता है, जो लिंग आधारित पूर्वाग्रहों और असमानताओं को चुनौती देता है। ऐतिहासिक समय में 'मैं' का अर्थ पुरूषों से लिया गया है। इस छोटे से शब्द पर मानो किसी एक समुदाय विशेष का अधिकार होने लगा। पर यह तो सही नहीं है क्योंकि इस पृथ्वी पर अस्तित्व प्रत्येक जीव का है, जो सांस लेता है।

वर्तमान में जो लैंगिक समानता का ज्ञान बांटते हैं, वे शायद इसका सही मतलब नहीं जानते। इसका सीधा सरल आशय है कि मौजूदा संतुलन को दूर किया जाए। व्यक्ति चाहे किसी भी लिंग का हो, उसे अपने 'मैं' को व्यक्त करने का हर संभव अवसर मिलना चाहिए। क्योंकि उसकी अस्तित्व की महत्ता बनाए रखना उस व्यक्ति का अधिकार है।

'मैं' की अवधारणा व्यक्तिगत सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन से जुड़ी हुई है। केदारनाथ इस बात पर जोर देती है कि प्रत्येक 'मैं' अद्वितीय, महत्वपूर्ण और मूल्यवान है। ऐसे में सभी को बिना किसी लिंग भेदभाव के अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचाने का अवसर मिलना चाहिए।

सोनिका
द्वितीय वर्ष
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार

A Vision For Inclusive Society

Over the centuries, The world has been evolving, so has the term 'Gender'. Earlier people believed that gender is a divine construct and everyone should follow the gender norms and stereotypes. Thus, limiting an individual's potential by gender biases. Rather, gender is a social construct by society that gives us a tag of 'male' or 'female' to an individual right away at their birth. Gender is not something to associate with biological aspects only, but it is moreover a feeling and understanding of oneself from inside and out.

Gender Neutrality is a crucial step towards an inclusive and progressive society that will help to eradicate gender norms and stereotypes. As the society teaches a boy to be strong and assertive while a girl should be soft spoken and obedient, by advocating people towards gender neutrality, these stereotypes can be changed and the society can accept boys showing their vulnerability and girls becoming independent and dominating the fields that used to be dominated by males. One such example can be seen in the movie 'Gunjan Saxena' where the society, specifically the males, could not accept a female as an officer at first but by witnessing her capabilities and potential they eventually accepted her with all due respect.

There are many other aspects that play a crucial role towards gender neutrality like the language we speak. Terms such as the chairman or fireman signify a specific gender, same as actress, etc. What we can do is instead use gender neutral terms like chairperson, firefighter, etc. Workplaces, schools, social media, movies, etc play a pivotal role in creating perspective towards gender neutrality. By introducing chapters in school that teaches about it, creating a place where an individual could freely express themselves and their potential without any discrimination or gender biases. There are many countries that include gender neutral terms in their legal documents like they/them instead of only he/she. By promoting gender neutrality, we can have a society that does not just have sympathy towards the other gender but has empathy and acceptance towards them. Creating jobs and opportunities for every gender, eradicating the gender biases and discrimination should be the main aim of society.

DIVYA PANDEY
Ram Lal Anand College

A Prayer for My Life and Death

May humanity be laid bare,
And sex be of no care.
Let all that matter anymore
Be that a person is flesh and bone,
And not the X and Y
That makes up their code.

Let me be blessed by love
Fair as the judgement of a blind dove.
Even the hate that I face,
Be a result of my soul's disgrace
And not the different organ
Nestled in my fleshy cave.

Let me suffer when I must,
Especially if the reason is just.
May i laugh in pure glee,
Even amongst those unlike me.
But never let the cause
Be the sex anymore.

And when my blood is cold,
And rigor mortis takes hold.
Let my body be found
Only by tigers abound,
Who see me only as food
And don't see me as a pleasure tool.

Let my eulogy be sung
Through a raven's lungs.
Who saw only my bones
Not even my skin's tone.
Who knew me to be human surely
And a genderless mystery.

ADITI KESTWAL
Ram Lal Anand College

लैंगिक तटस्थता का वह दृष्टिकोण जो छुपा है

लैंगिक तटस्थता वह विचार है, जिसके अनुसार नीतियों, भाषा और अन्य सामाजिक संस्थाओं को, जो सामाजिक संरचनाओं व लैंगिक भेदभाव की विषेशता को बताता है। उन सभी को लैंगिक भेदभाव से बचाना, जो समाज के विभिन्न वर्ग है, चाहे वह पुरूष, महिला या अन्य तीसरा वर्ग हो। लैंगिक तटस्थता को तीन पक्षों के माध्यम से समझना-

महिला दृष्टिकोण

पहला दृष्टिकोण महिलायें है, जो मुख्यतः वंचित है। इनका आदिकाल से ही शोषण देखने को मिलता है। चाहे वो सामाजिक तौर पर पति, भाई व घर वाले हो या फिर राजनीतिक तौर पर सत्ता के लिए हो। सभी परिस्थितिओं में महिलायें मुख्यतः वंचित हो रही है। महिलाओं की स्थिति में वर्तमान में खाफी हद तक परिवर्तन देखने को मिलता है। राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्र में महिलायें भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में नाम कमा रही हैं। महिलायें आज के आधुनिक दौर में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। इतना ही नहीं कई क्षेत्रों में वह पुरूषों से श्रेष्ठ हैं।

पुरूष दृष्टिकोण

दूसरा दृष्टिकोण पुरूष दृष्टिकोण है। ध्यान रहे विषय लैंगिक तटस्थता है, न कि महिला सशक्तिकरण। पुरूषों का भी वर्तमान संदर्भ में शोषण देखने को मिलता है। यौन आपराधिक मामलों में जबकि पुरूष निर्दोश होते हुए भी उसे दोषी करार दिया जाता है। क्योंकि हद तक महिलाओं के पास विशेष प्रावधान हैं, जो वह आज के समय में गलत प्रयोग कर रही हैं। आज के वर्तमान काल में पुरूष भी असुरक्षित हैं और समझने का कोई जल्दी प्रयास ही नहीं करता। इसलिए उनका शोषण बढ़ता ही जा रहा है। पुरूष को यह समझाते हुए कई कलंकों का सामना करना पड़ता है। सभी को लगता है कि पुरूष मानसिक व स्वास्थ्य से बहुत ही बलवान हैं, उनके अंदर कहां इतनी भावनाएं व दर्द होता है, जबकि वह मन ही मन चिंतित व अस्वस्थ्य रहता है। वह मानसिक तौर पर बीमार हो जाता है। मेरा आग्रह कि उन्हें भी समझने का प्रयास किया जाना चाहिए।

ट्रांसजेंडर व एलजीबीटीक्यू दृष्टिकोण

समाज में अत्यधिक शोषित वर्ग ट्रांसजेंडर व एलजीबीटीक्यू के अन्य सदस्य हैं। भले ही इन्हें इतिहास में विशेष मान्यता दे दी गई है। लेकिन उनके अधिकारों को अभी भी मान्यता नहीं दी है, जिसके कारण उनका आज भी शोषण देखने को मिलता है। मुख्यतः उन्हें लिंग आपराधिक मामलों में कठिनाई आती है। इस संदर्भ में कानूनी तौर पर भी उनकी कोई सुनवाई नहीं है। आईपीसी की धारा 377 के तहत भी वे कुछ नहीं कर सकते हैं। वर्तमान समय इनका अधिक शोषण व समय के अनुरूप वो वंचित होते जा रहे हैं। इस संदर्भ में कानूनी तौर पर उनके साथ सही बर्ताव किया जाए व उनके साथ कानूनी तौर पर समान, समानता व न्याय मिलना चाहिए।

निष्कर्षतः हमें लैंगिक तटस्थता को बढ़ावा देना चाहिए। जिसके माध्यम से नीतियों, भाषाओं से नीतियों, भाषाओं व सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन देखने को मिलें। लैंगिक तटस्थता आज के आधुनिक दौर में समाज को काफी प्रभावित करता है।

प्रियांशु शुक्ला
द्वितीय वर्ष, हिंदी विभाग
राम लाल आनंद महाविद्यालय

समाज : एक न्याय की दासता

मैं समाज हूँ। वो ही समाज, जो न बड़ों को बकशता है न ही बच्चों को। न बूढ़ों को, न जवान को। न नर को, न नारी को। न धर्म को, न अधर्म को। हां मैं वो ही समाज हूं, जिसने हकीकत तो दूर की बात है पर अपने परिचय में भी सभी लिंगों को आदर नहीं दिया। वैसे तो मुझे दुनिया का चालक कहते हैं। सब चीजें मुझसे ही होकर निकलती है। एक समय था, जब मुझे सबसे बड़ा न्यायाधीश कहा जाता था। आज भी हूं। बस लोगों का भरोसा नहीं रहा अब। इसलिए नहीं क्योंकि आज कोर्ट और पुलिस है, परंतु इसलिए क्योंकि मैंने न्याय समझकर अन्याय करना शुरू कर दिया था। मैं सही लोगों का बड़ा गुनाहगार बन गया था। गुनाहगार उन चीखों का, जो बंद दिवारों में कैद थी। गुनाहगार उन उम्मीदों का जिसका मेरे नियमों और मर्यादा के बोझ ने गला घोट दिया। कहने को हम आज समानता और सशक्तिकरण की बात करते हैं पर असल में तो ये सिर्फ बातों में रह गया है। मैं एक ऐसा समाज हूं, जहां पुरूष प्रधानता एक सच्चाई और बराबरी केवल एक स्वांग है। एक समाज जहां नारी है किन्नर। सबको कहा जाए कि "तुम्हें समझौते का जीवन ही जीना पड़ेगा। इसी पर,

"मर्यादा, नियम, सीमा बने,
वो बनाने वाला कौन था?
दुर्गा की पूजा करके फिर नारी का संहार किया।
अर्धनारीश्वर का जप करके,
इंसानों का अपमान किया।
जिसे समाज में मान तो छोड़ो, हिस्सा तक भी न दिया,
उससे इन सबने मिलके किन्नर का नाम दिया।"

वैसे तो हर चीज के लिए कहा जाता है कि उसके दो पहलू हैं। मेरे समाज में इस दोहराव को सिर्फ "छलावे" का नाम दिया जा सकता है। जहां अधिकारिओं को नारी पर उपकार समझा जाए और किन्नर समाज को समाज का हिस्सा ही न समझा जाए, वो समाज हूं मैं। आज पूरे एलजीबी. टीक्यूआईएप्लस के हक के लिए लड़ रहा हूं। औरत और एलजीबीटीक्यू के "टी" को आज तक भी इंसाफ नहीं दे पाया हूं। मैं वहीं समाज हूं जो स्त्रियों को झुकने पर आज्ञाकारी और नजर उठाने पर बेशर्मी कहता हूं। नारी साथ खड़ी रहे तो पतिव्रता, वरना उसके दामन पर दाग लगाता हूं।

"कोख में लेकर घूमी जो,
वो मां भी एक नारी थी।
राम के साथ वनवास गई,
वो सीता बड़ी निराली थी।
सत्यवान का साथ दिया,
वो पतिव्रता सावित्री भी,
और लक्ष्मीबाई झांसी वाली,
वो वीरांगना भी एक नारी थी।"

मैं (समाज) अपने दोहरे व्यवहार के कारण किसी के साथ न्याय नहीं कर पाया। मैंने हर कानून अपनी सुविधा के अनुसार बनाके पुरूष प्रधान समाज बनने में योगदान दिया। बस इसलिए ही आज समाज को समाज पर भरोसा नहीं रहा। दरिंदों को बचाने वाला और बाकि सबको समझौता सिखाने वाला न्यायाधीश हूं मैं। जी हां, समाज हूं मैं।

लैंगिक तटस्थता एक ऐसा शब्द जो सुनते ही व्यक्ति के मन में आता है कि एक ऐसा समाज जहां सभी लोग बजाय अपने लैंगिक पहचान के आधार पर, बल्कि अपने हुनर व काबिलियत के अनुसार समाज में अपनी पहचान बनाते हैं। एक ऐसा समाज जहां योग्यता को ऊपर रखा जाता है, लिंग के अनुरूप उस रूढ़िवादी विचारधारा से। यह शब्द दो शब्द लैंगिक तटस्थता केवल दो सामान्य शब्द ही नहीं, एक सुदृढ़, सुंदर, सषक्त समाज की परिकल्पना है। यदि शाब्दिक अर्थ पर जाएं तो लैंगिक तटस्थता का अर्थ कुछ इस प्रकार है- "लैंगिक अर्थात् समाज के जो स्त्री और पुरूष, ट्रांसजेन्डर लिंग है और तटस्थता का अर्थ है कि बिना किसी भेदभाव के पक्षपात से विलग।

ऐसे में सवाल यह है कि क्यों हम नर्स कहने पर एक स्त्री का ही विचार करते हैं। क्यों हम टीचर कहने पर मुख्यतः स्त्री का ही विचार करते हैं। क्यों हम आर्मी सुनते ही पुरूषों को ही अपने मानस पटल पर पाते हैं। क्या कभी हमने इस बारे में सोचने का प्रयास किया? नहीं! इसका सीधा कारण है लैंगिक तटस्थता की कमी। इसके कारण केवल एक शब्द मात्र से हम किसी कार्यशैली, पेशे को एक लिंग में बांधकर रख देते हैं।

यह समझने वाली बात है कि लैंगिक समानता और तटस्थता में अंतर होता है। समानता बात करती है समान अधिकारों की। परंतु तटस्थता बात करती है पक्षपात रहित होने में। हां लग रहा होगा कि दोनों समान हैं पर नहीं। जब बात समानता की होती है, तब हम मुख्यतः ऊपरी सतह पर बात कर रहे होते हैं। सबको समान अधिकार देने की, लिंग पर अधिकार व उनसे वंचित न होने की बात। परंतु तटस्थता निचली सतह पर बात करती है, यदि भेदभाव पक्षपात मूल से खत्म नहीं हुआ तो समान अधिकार कब तक समाज में रह पाएंगें और समानता का तारतम्यता समाज में बिना तटस्थता की दृढ़ नींव के कब तक समाज में शांति व समता को बनाए रखेगा।

बात आती है कि यह तटस्थता आएगी कैसे? तटस्थता लाने के लिए सबसे पहले हमें योग्यता, हुनर को लिंग के वर्गीकरण से ऊपर रखना होगा। जरूरी नहीं कि हर व्यक्ति को लिंग के आधार पर उसको सी. मित कर दिया जाए। दूसरा पहलू हो सकता है भाषा। जैसे जब हम बॉडीगार्ड कहते हैं तो मन में दिमाग में एक हट्टे कट्टे पुरूष का चेहरा आता है। इस विचारधारा को बदलने के लिए बॉडीगार्ड की जगह केवल गार्ड शब्द के प्रयोग से धीरे धीरे तटस्थता आएगी। सामाजिक संस्थाओं में भी महिलाओं व पुरूषों की योग्यता को प्राथमिकता देनी चाहिए न कि लिंग को।

अंततः हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि लैंगिक तटस्थता ही किसी भी प्रकार की सामाजिक उन्नति, द्वेष की उन्नति, मानव धर्म की उन्नति में एक अति प्रमुख सहायक होगी। केवल लैंगिक समानता से समान अधिकार मिल जाएं, ऐसा संभव नहीं। लैंगिक तटस्थता क्योंकि यह समाज की संकीर्ण सोच पर चोट करता है। यह एक अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उस समाज के नींव से बदलाव होगा, समाज की मूल विचारधारा में परिवर्तन आएगा, जिससे अंततोगत्वा एक सभ्य, समता प्रधान समाज की स्थापना होगी। जिससे असल में मानव समाज की उन्नति होगा और समाज में निश्चित रूप से समानता आएगी और मानव सच में विकास कर पाएंगें।

लक्षित
शहीद सुखदेव कॉलेज ऑफ बिजनस स्टडीज

A World for All

A world divided, torn in two,
By roles we never freely drew.
Yet deep within, the truth remains,
No heart is bound by given chains.

A girl can soar, a boy can weep,
Dreams are dreams- no bound to keep.
Strength's not measured, soft or tough,
Love and courage are enough.

A voice suppressed, a talent lost,
What price we pay, what heavy cost.
But hand in hand, if we stand tall,
There's room for one, there's room for all.

Not hers, not his, but ours to build,
A world where dreams are all fulfilled.
Where worth is not by birth assigned,
But by power of heart and mind.

So break the mold, let fairness reign,
Embrace the sun, release the rain.
For only when we all stand free,
Can we become what we must be.

MANISH BHARDWAJ
B.Com (H)
Ram Lal Anand College

एक खत पिता के नाम...

लैदर्शन नगर, शास्त्री भवन
छपिया बिहार, 841312

पूज्यनीय पिता जी,

आपके चरणों में मेरा सादर नमन। आशा करता हूं आप सकुशल होंगें, मां और छोटी भी अच्छे से होंगें। आज मुझे लंदन आए पूरे 5 महीने हो गए हैं। यह मेरा आपको तीसरा खत है। पहले के दो चिठीयों में मैंने तो बस आपसे अपने पढ़ाई लिखाई की बात की है। पर आज मैं चिट्ठी अपने इस 5 महीने के अनुभव को बताने के लिए लिख रहा हूँ।

यहां आकार मैंने अपने जीवन के बहुत सारे सीखों को गलत साबित होते हुए देखा है। वो सीख जो मेरी मां ने या समाज ने मुझे सिखाई। पिता जी मैं माफी चाहूंगा पर इस जगह और यहां के लोगों ने मेरे विचारों पर एक बहुत बड़ा प्रभाव डाला है। मुझे बतलाया है कि जिस संस्कृति को हम इतना बड़ा मानते हैं और उसकी सीखाई हर बात को अपने सिर पर रखते हैं, वास्तव में वह एक झलावा है। यहां आकार मुझे यह एहसास हुआ, जो व्यवहार मां या छोटी के साथ करते हैं या जो व्यवहार हमारा नारियों के साथ होता है, वो बहुत ही गलत है। उनकों अपने से छोटा मानना, चार दिवारी में कैद रखना वो सब गलत है। इस बड़े से शहर ने मुझे सिखाया कि शिक्षा केवल पुरूषों के लिए नहीं है, बल्कि महिलायें भी पढ़ सकती हैं और आगे बढ़ सकती है।

पिता जी मैंने यह भी सीखा कि पुरूष को हमेशा कठोर ही नहीं रहना चाहिए। वह भी भावुक हो सकता है, वह भी रोक सकता है, जब उसके अपने घर की याद आए तो। आपने जो बचपन से जो भी सबक दी थी वो सब गलत साबित हुई। पिता जी यहां जब मैं पढ़ाई के लिए आ रहा था तब आपने कहा था कि अब मैं छोटी के ब्याह के समय आऊं। पर जब मैं यहां आया तब समझ में आया कि क्या छोटी नहीं पढ़ सकती। बिल्कुल पढ़ सकती है पर जिस खोखले विचार से हमारे समाज ने स्त्री और पुरूष में भेद बनाएं है, वो ही आज हमारे समाज में महिलाओं की इस स्थिति का कारण है। मैं कितना बेवकूफ था, जो यह मानता था कि खाना तो सिर्फ स्त्रियां ही बनाती हैं पर यहां आके देखा तो पुरूष और स्त्री अपना हर काम स्वयं करते हैं। उनमें कोई भेद भाव नहीं है। न ही कोई खोखला समाज, उन पर कोई भेदभाव थोपने वाला है।

पिता जी मैं आपको एक महिला के बारे में बताना चाहूंगा, जिसका नाम कल्पना चावला है। वह एक भारतीय मूल की महिला हैं। शायद आपको न पता हो पर यह अमेरिका की तरफ से उनके अंतरिक्ष अभियान में अंतरक्षि में गई थी। आप सोच रहे होंगें कि मैं आपके यह सब क्यूं बता रहा हूं पर हमें यह समझने की जरूरत है कि हमे अपने पितृसत्ता भरे सोच से बाहर निकलकर किसी भी इंसान के लिए कुछ भी तय करने की जरूरत नहीं है। हर इंसान चाहे वो महिला हो या पुरूष अपने जीवन में जो चाहे बन सकता है।

पिता जी आपको यह लग रहा होगा कि मैं आपके विचारों की खिल्ली उड़ा रहा हूं। या फिर तैहीन कर रहा हूं पर ऐसा नहीं है। हमे भी समझना होगा कि हम किसी के जीवन का बागडोर अपने हाथ में नहीं रख सकते हैं। मैं आशा करता हूं कि आप छोटी को पढ़ने देंगें। आप जैसे मुझे बाहर आकर अपने सपने पूरे करने कि आजादी दी है, उसे भी देंगें। इसी के साथ मैं अपने वाणी को विराम देता हूं।

आशीष राज
मोती लाल नेहरू कॉलेज

यूं तो अकेला भी अक्सर गिर के संभल सकता हूं मैं...

कभी कभी मेरे दिल में ख्याल आता है
कि क्यूं ये दुनिया एक दूसरे लिंग में भेदभाव करती है
कि ख्याल यह भी आता है क्यूं ये दुनिया
जब शिव को पूजती तो किन्नरों का सम्मान नहीं करती
नजरें झुक जाती सबकी बात सही से होती नहीं
खैर अब तो काफी बदली है चीजें
जैसा सोचा वैसा तो नहीं पर कदम उठाए गए हैं हमेशा की तरह।
जो दबा जो सहा वही एक साथ खड़ा होके बोला
फिर भी समाज में बदलाव न हुए
कुछ बदले और कुछ ने उनको बदला
क्या मतलब कुछ भी न बदला
जो जन्मे छोड़ा उनको, जो दिखे भागे उनसे
क्या ऐसा ही था?
हां ऐसा ही था तो फिर बदला क्या?
बदला ये कि कुछ ने किया सम्मान
कुछ से कुछ ने किया अपमान
तभी कुछ ने अपना लिया यह सब देख हुआ घनघोर अपमान
अपमान के डर से फिर कुछ ने छोड़ा, पकड़ा, फेंका।
तभी एक गाना बजता है

यूं तो अकेला भी अक्सर गिर के संभल सकता हूं मैं...

अरे हां!
फिर क्या हुआ, फिर हुआ यह कि
लोगों ने खुद का किया सम्मान और
नहीं छुपाया कि वो भी हैं एक इंसान
आ खड़े हुए सब मिलकर
सब ने देखा, सब ने जाना, तब सब ने पहचाना
ये बेटा मेरा, ये बेटी मेरी, ये भी ऐसा, वो भी ऐसी
रोए लोग, खोए लोग, बुलाएं लोग, ले जाएं लोग
तभी एक गाना बजता है

यूं तो अकेला भी अक्सर गिर के संभल सकता हूं मैं...

अरे यार फिर रिपिट हो गया!
क्या ???? गाना रे...

न्यूटन कुशवाहा
मोती लाल नेहरू कॉलेज (प्रातः)

सोचिएगा जरा...

समझदार यहां हर कोई
बात करेंगे फिर भी वही
ये लड़का है ये लड़की
क्या इंसान होना काफी नहीं

बाकियों को तो गिनते ही नहीं
ये समझदार अपने समाज में
स्त्री पुरूष मात्र दो ही लिंग
स्वीकार्य है समाज में

यह लड़का है ताकतवर
यह लड़की है कमजोर
लड़कियों ने सब कर दिखाया
फिर भी यही शोर है

लड़का धुएं में तनाव उड़ाए
लड़की अपने संस्कारों को
एक बार गौर से विचारों
अपने इन विचारों को

कहीं लड़कियां पैदा नहीं हो पाती
कहीं लड़के आत्महत्या को मजबूर हैं
कहीं लड़कियां घर की नौकर
कहीं लड़के कमाने वाले मजदूर हैं

पुरूष हमेशा अकेले खड़े हैं
स्त्री के साथ सारा समाज है
इस आधे समाज को तो पता भी नहीं
कि सच में क्या चाहता समाज है

जरूरी नहीं कि नारी है तो बेचारी है
और पुरूष ही दरिंदा है
तुम आखिर क्या जानो
वो किन हालातों में जिंदा है
लैंगिक समानता की जरूरत
है स्त्रियों को जितनी
लैंगिक समानता की ही जरूरत
आज है पुरूषों को भी उतनी

पूरे जीवन की मेहनत की कमाई
स्त्री एक झटके में ले जाए
बात छिड़ी लैंगिक समानता की
तो यह पक्ष भी तो देखा जाए

सभी की मजबूरी समझो
सभी को उड़ने दो
समाज जो गलत चलने लगा
उसे सही राह पर मुड़ने दो

समझदार बनो सही वाले
जो कहे सभी समान, वही वाले
सबको समान अवसर मिले
सबको उनका हक मिले
समझदार पर समय न ऐसा आ आए
कि उसको उसकी समझदारी ही खा जाए

अनुराग सुथार, तृतीय वर्ष
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार

Gender Champion Towards True Equality

Serving as the Gender Champion of the college has been both an honour and a meaningful responsibility. It offered me a platform to understand the deeper layers of gender sensitivity and contribute to building a space that encourages equality, awareness, and respect for all identities. This journey has not been about advocating for one gender alone but about nurturing a culture that supports every individual, regardless of how they identify.

Gender-related issues are not isolated or one-dimensional. They surface in various ways—through casual teasing, limiting beliefs about what certain genders can or cannot do, and assumptions that intellectual ability or emotional expression depends on gender. Even today, there are unspoken expectations placed on the genders, shaping how people behave, how they're perceived, and what roles they're expected to play. Our campus, however, has steadily grown more inclusive, all thanks to the continued support of the administration and faculty, who have encouraged dialogue and openness.

Throughout this journey, the focus has been on encouraging conversations, breaking biases, and highlighting that equality is not about uniformity but about mutual respect. It is not simply about extending rights but about changing perceptions—about who gets to lead, who gets heard, and who feels seen. True equality means recognising that gender should never be a limitation or a barrier to opportunity.

Toni Morrison once said, "If you can only be tall because somebody is on their knees, then you have a serious problem." This quote echoes the essence of what I've tried to reflect in my work—that equality must come from lifting each other up, not by holding others back. Being a Gender Champion has been a humbling and empowering experience, and it has taught me that lasting change begins with small, consistent efforts—whether in words, actions, or attitude.

The hope is that we continue to move forward as a community that values inclusion not just as a principle, but as a practice that shapes the everyday lives of every student on campus.

MEHAK GOYAL
BA (H) English II Year
Ram Lal Anand College

Epistolary Writing : From Amy Dunne to Bertha Mason

To the woman in the Attic,
I know you. I hear you. I see you.
They locked you away, didn't they? Labeled you mad, whispered about you behind the walls, behind the closed doors. Told the world you were dangerous. Unstable. Unfit for love, for life,for freedom. A burden, a mistake. And he- your lovely husband, who vowed to keep you by his side, happy. Now has found his lovelier, purer love.

How familiar.
See, madness is subjective, Bertha. Men write history and they have two options to assign- sane and inconvenient. Inconvenient becomes insane. You were inconvenient for them Bertha. They call the inconvenients out and make their screams echo in their narratives of pure love. They named me mad too, insane, manipulative. Manipulative! Oh manipulative, as if men are never manipulative. As if they are not the ones manipulating history, but men do not get to write mine. I do.

I burned my story, Bertha. Oh! How you burned yours. Whole world was burning but you were the fire of yours Bertha. I imagine what it would've been like for you, the walls burning down, your skin melting, but never do i imagine you scared. Do you think Rochester can forget you? I think he will remember you forever. You will haunt him forever. He will see you in every flicker of a candle. He will be reminded of you everytime he will look in the eyes of Jane, where he sees the trust that you once had for him. He will forever fear you. Men are forever scared of the women they've wronged.

Do you think he would have told Jane that you're dead and how you were- wild, dangerous, animal like, and how she was so much softer, purer. That's how it goes Bertha. You and I are not very different- We got our revenge through flames. They said you were the mad woman, labelled you that, for me they said I manipulated the truth. My husband, my dear husband, wanted me to be "the cool girl" and I tried. But it is never worth it, Bertha. We got our revenge, our screams will be remembered. They will haunt.

We are inconvenient Bertha,
Yours in fury,
Amy Dunne

KAJAL
BA (H) English III Year
Ram Lal Anand College

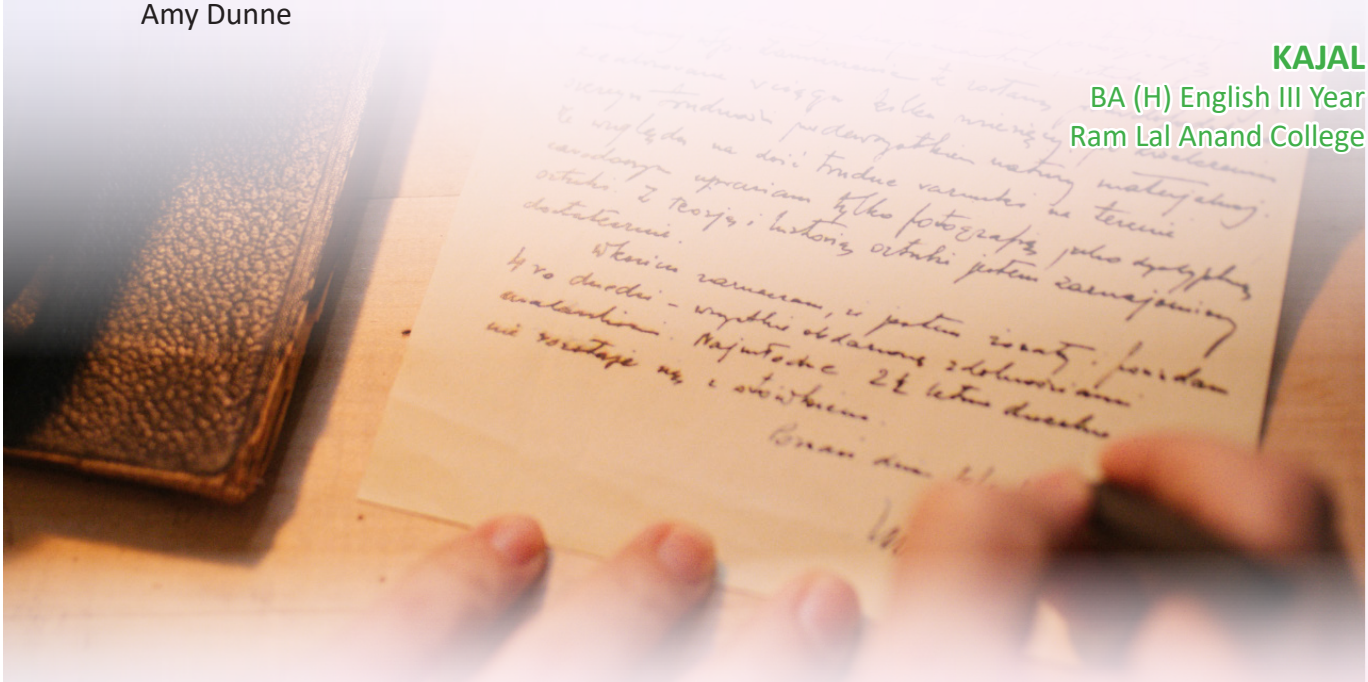

इंसान ही सबसे बड़ी पहचान है

मनुष्य के अस्तित्व की बुनियाद समानता पर टिकी है। जब हम जन्म लेते हैं, तब न कोई लड़का होता है, न लड़की। बस एक जीवन होता है, जो सांस लेता है, महसूस करता है और विकसित होता है। फिर धीरे-धीरे समाज हमें परिभाषित करता है। 'यह लड़का है', 'यह लड़की है' और उसके साथ जुड़ जाते हैं हजारों नियम, सीमाएं और अपेक्षाएं। लेकिन क्या वास्तव में जीवन की क्षमता को किसी एक लिंग तक सीमित किया जा सकता है? क्या आत्मा का कोई लिंग होता है?

अगर हम गहराई से सोचें, तो पाएंगे कि स्त्री और पुरूष होना केवल एक भौतिक रूप है। चेतना, करुणा, बुद्धि, साहस ये सभी गुण किसी विशेष लिंग की संपत्ति नहीं हैं। फिर क्यों हम समाज में ऐसा विभा. जन करते हैं कि कुछ भूमिकाएं केवल पुरूषों की हों और कुछ केवल महिलाओं की।

लैंगिक समानता का अर्थ है, अपने अस्तित्व को पूरे रूप में जीने की स्वतंत्रता। यह केवल अधिकारों की बात नहीं है, बल्कि आत्मा की गरिमा की बात है। जब हम एक पक्ष को दबाते हैं, तो समाज असंतुलित हो जाता है। सोचिए, अगर एक पक्ष की उड़ान को रोक दिया जाए, तो क्या पक्षी उड़ सकती है? ठीक वैसे ही, अगर महिलाओं को अवसर नहीं दिए जाते, तो समाज आधा अधूरा रह जाता है।

समानता से तात्पर्य यह नहीं कि सभी एक जैसे हों, बल्कि यह कि सभी को अपने-अपने तरीके से विकसित होने का अवसर मिले। यह विविधता में एकता की भावना है। हमें शुरुआत अपनी सोच से करनी होगी। अपने घरों से, अपनी भाषा से, अपने व्यवहार से। एक लड़की को यह न कहें कि 'तुम लड़कियों जैसा मत रोआ' और एक लड़के को यह न सिखाएं कि 'मर्द को दर्द नहीं होता।'

हर व्यक्ति को अपनी संवेदनाओं को जीने, अपनी राह चुनने और अपने सपनों को आकार देने का हक है, बिना किसी सामाजिक परत के। लैंगिक समानता कोई नारा नहीं, यह एक दर्शन है। यह मान्यता कि हर जीवन समान मूल्य का है। जब हम किसी को उसके लिंग से नहीं, बल्कि उसके मन और कर्म से पहचानना शुरू करेंगे, तभी एक सच्चा, संतुलित और सुंदर समाज संभव होगा। क्योंकि अंत में, हम सभी केवल इंसान हैं और यही सबसे बड़ी पहचान है।

जया सिंह
द्वितीय वर्ष
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार

क्या रोटी भी अंतर करती है?

क्या रोटी भी अंतर करती है?
मेरे मम्मी और पापा में
क्योंकि जब दोनों ही निकलते थे
बस्ता उठा रोटी कमाने को,
तो मम्मी सारा खाना बनाकर
'रोटी बना दी हैं' कहकर
और पापा लंच का डब्बा बैग में डाल,
बनी बनाई रोटी खाते भी देर कर देते थे
ये सवाल बचपन से मेरे जहन में पनपता रहा
और आज भी उमड़ता है
जब मैं खुद
एक कामकाजी महिला हूं

नंदनी वार्ष्णेय
प्रथम वर्ष
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार

A Step Towards True Equality

Gender neutrality is a principle that encourages the elimination of gender-based differences in terms of language, conduct, policies, and roles. It resists the conventional norms that place definite expectations, identities, or restrictions upon an individual based on his/her gender. With the increasing inclusivity of societies across the globe and the greater awareness of human diversity, gender neutrality stands as a essential paradigm to attain genuine equality.

Fundamentally, gender neutrality aims to establish spaces wherein people are neither judged nor labeled according to gender. These would range from the use of non-gendered terms such as "they/them" pronouns or referring to a person as "chairperson" rather than "chairman" to more extensive social and institutional habits—such as providing gender-neutral bathrooms, adopting inclusive education, and crafting legislations and policies which do not discriminate against gender identity or expression.

Perhaps the strongest argument for gender neutrality is that it has the power to break down negative stereotypes. Stereotypical gender roles tend to put too much pressure on people to fit into expectations—like the idea that men must be in charge and emotionally distant, and women should be nurturing and passive. Not only are these roles outdated, but they also stifle individual freedom and development. Through the encouragement of neutrality, society creates an avenue for people to self-identify beyond these restrictions, depending on their personality, interests, and talents.

Gender neutrality is especially applicable to non-binary and transgender persons. These individuals are usually targeted by marginalization, discrimination, and violence owing to their not conforming to the binary model of gender. Gender-neutral places can provide a sense of protection, acknowledgment, and respect. This is mostly important in arenas such as education, the labor market, and public services where inclusivity would have a lasting effect on well-being and mental health.

Critics of gender neutrality sometimes claim that it erases the existence of gender differences or disrespects cultural values. But it is not a mission to disregard or devaluate gender; rather, it's a mission to ensure that gender isn't a foundation of inequality. Gender neutrality stresses choice and equality—enabling individuals to be and represent themselves in whatever way they want, not being restricted by societal norms.

Education also has a crucial role to play in pushing the agenda of gender neutrality. Schools can raise a generation to be more accepting and empathetic by exposing children to notions of respect, diversity, and inclusion from the beginning. Media and entertainment sectors are also extremely powerful means of molding the popular perception. When books, movies, and commercials depict diverse identities and gender-neutral narratives, they help make gender inclusivity the new normal.

In conclusion, gender neutrality is not merely a trend—it is a necessary evolution in the pursuit of human dignity and justice. It encourages us to see beyond the labels and treat each person as an individual. While change may be gradual and met with resistance, embracing gender neutrality is a step forward in building a world where everyone, regardless of gender, has equal opportunity to thrive.

DIVYA PANDEY
Ram Lal Anand College

ये बेड़ियां कब तक बंधी रहेंगी ?

लड़कियों के पैदा होने के पहले ही बेड़ियां लगा दी जाती हैं। हम दो हमारे दो, लेकिन दोनो बेटे हो ये कैसी मानसिकता है? 1970 से 2020 तक 14.26 करोड़ बच्चियों को जन्म से पहले मारा गया। दुनिया में 4.6 करोड़ बेटियो को जन्म नहीं लेने दिया गया। भारत में 2013 से 2017 तक 4.6 लाख लड़किया भारत में गर्भ में ही मार दी गई । हर दिन 1260 और हर घंटे 52 लड़कियों की मौत गर्भ में होती है। अगर मैं उस दुनिया में आ भी गई तो जन्म के 5 साल की उम्र तक 9 में से 1 बच्ची की मौत बेटे ही चाह में हुई। 2021 में, भारत में दहेज हत्या के मामले लगभग 6.8 हजार थे। जन्म से उसके बेड़िया मानो खत्म ही नहीं होती। उनके खाने से लेकर पहनावे तक, घर में रहने से लेकर घर से बाहर जाने तक बेड़ियां लगी रहती हैं। जब इन आंकड़ों को देखते हैं तो आज भी समाज में लैंगिक समानता जैसे विषयों को खोखला पाते हैं। जो स्त्री किसी पुरूष को पैदा करती है फिर उसे समाज में पुरूष प्रधानता के कारण गुलामी में रहना पड़ता है, तो समानता की बातें हाशिए पर चली जाती हैं।

लैंगिक समानता का मतलब है कि सभी लोगों को, चाहे उनका लिंग कुछ भी हो, समान अवसर और अधिकार मिलें। असल में यह परिभाषा सिर्फ किताबों में सीमित है। समाज में लैंगिक असमानता को आप देख सकते है, महसूस कर सकते है। उदाहरण के लिए, जब वेतन में असमानता देखने को मिलती है। जब आप अपने घर में लड़कियों पर बंदिशे देखते हैं। हाल ही में आई हिंदी फीचर फिल्म 'लापता लेडीज' में लैंगिक असमानता को कोमल तरीके से महसूस कराया गया है। घर की महिलाएं अपने पसंद के पकवान नहीं बनाती हैं, जो घर के पुरूष को पसंद है वही खाना घर में बनाती हैं।

समाज में जब तक लैंगिक असमानता रहेगी तब तक बाल विवाह, लिंग आधारित हिंसा और दहेज के लिए महिलाओं को प्रताड़ना झेलना पड़ेगा। शिक्षा ही समाज को सुधार की तरफ ले जा सकती हैं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था - "यदि आप एक पुरूष को शिक्षित करते हैं तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, हालांकि यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं।" लैंगिक समानता के बिना देश के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। पंडित नेहरू ने कहा था कि आप किसी देश की महिलाओं की स्थिति देखकर बता सकते हैं कि उस देश की क्या हालत है।

लैंगिक समानता किसी भी देश को कई तरीकों से लाभान्वित कर सकती है। जब महिलाएं और पुरूष समान अवसरों का लाभ उठाते हैं, तो यह आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है। लैंगिक समानता से समाज में न्याय और समरसता बढ़ती है, जिससे सभी को समान अधिकार मिलते हैं। लैंगिक समानता से स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा तक पहुंच में सुधार होता है, जो समाज के समग्र विकास में सहायक है। समानता से महिलाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल होने का मौका मिलता है, जिससे बेहतर नीतियां बनती हैं। लैंगिक समानता से परिवारों में सामंजस्य और सहयोग बढ़ता है, जिससे जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है। किसी भी देश के मजबूत नींव के लिए लैंगिक समानता का होना बेहद जरूरी है। समाज में सुधार के लिए लैंगिक असमानताओं को दूर करने के लिए कानूनों का निर्माण करना चाहिए। यह जरूरी है कि लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए अवैतनिक देखभाल को महत्व देना चाहिए। इसके साथ ही लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए परिवार और घर के अंदर के कामों को साझा करना चाहिए।

लैंगिक समानता का तात्पर्य है कि महिलाओं और पुरूषों दोनों के हितों, जरूरतों और प्राथमिकताओं को ध्यान में रखा जाता है, जिससे महिलाओं और पुरूषों के विभिन्न समूहों की विविधता को पहचाना जाता है। लैंगिक समानता महिलाओं का मुद्दा नहीं है, बल्कि इसमें महिलाओं के साथ-साथ पुरूषों को भी शामिल होना चाहिए। आज जरूरी है कि आप किसी भी प्रकार का भेदभाव ना करें तथा इसको बढ़ावा भी नहीं दे। समाज के हर वर्ग को लैंगिक समानता के बारे में जागरूक करें।

संजीव राज
तृतीय वर्ष
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार

पुरूष, महिला और ट्रांसजेंडर को समान दृष्टि से देखें : डॉ. शालिनी

यूनिवर्सिटी ऑफ स्कूल एजुकेशन गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी में कार्यरत डॉ. शालिनी यादव का पिछले दिनों राम लाल आनंद महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के लिए साक्षात्कार लिया गया। हिन्दी पत्रकारिता की छात्रा खुशी ने लैंगिक समानता से जुड़ी चुनौतियों और संभावनाओं सहित अनेक बिन्दुओं पर उनसे बातचीत की। उसी बातचीत के कुछ अंश 'कैम्पस कनेक्ट' से विशेष अनुबंध के तहत अस्मि ई-जर्नल के पाठकों के लिए यहां पेश है...

लैंगिक समानता क्या है?

समानता यानी इट्स ए मेन, व्हेदर इट्स ए वुमेन ऑर व्हेदर इट्स ए ट्रांसजेंडर। अर्थात् एक आदमी, एक महिला और ट्रांसजेंडर, जिसे आप थर्ड जेंडर कहते हैं, उन सबको समान दृष्टि से देखा जाए। समानता और समता दोनों समान रूप से चलती है। अगर आप ये कहे कि समता के बगैर समानता आ जाएगी, वो संभव नहीं है।

लिंग अधारित शिक्षा कितना जरूरी है?

हमें ये फर्क पता हो कि साक्षरता और शिक्षा इन दोनों में जमीन आसमान का अंतर है। मुझे लिखना आना, पढ़ना आना, सब ठीक है। ये साक्षरता की बात है। लेकिन जब मैं शिक्षा की बात करती हूं तो क्रिटिकल थिंकिंग डेवलॅप यानी तार्किक सोच को विकसित करने की बात कर रही हूं। ताकी हर बच्चा ये समझ सके की क्या सही है? क्या गलत है? जेंडर एजुकेशन राइट जिसे लिंग आधारित शिक्षा कहते हैं, ये शिक्षा आपको प्राइमरी स्कूल से शुरू करनी पड़ेगी। अगर घर में भी बच्चे के साथ कोई भी लिंग के आधार पर भेदभाव हो रहा है तो यह दायित्व शैक्षिक संस्थानों का है। वो उस बच्चे को एक ऐसा प्लेटफार्म दे कि वो समझ सके कि मुझे अपने आप को समान महसूस करने के लिए क्या करना पड़ेगा। इसलिए लिंग अधारित शिक्षा जरूरी है।

स्टीरियो टाइप तोड़ने के लिए क्या तरिका है ?

आप पूछते हैं कि लड़का हो? कैसे रो रहे हो? या लड़की हो तुम्हें तो खाना बनाना आना चाहिए। आप उसमें चॉइस नहीं देते। ये स्टीरियो टाइप्स भी सोशिअलाइजेशन यानी समाजीकरण के जरिए ही आप सीखते हो। ये बहुत आश्चर्य की बात है कि अगर टीचर ही ये विश्वास करता है कि लिंग समानता होनी नहीं चाहिए तो यह आपके सामने कितनी बड़ी चुनौती बन जाता है। इसलिए जेंडर का अनिवार्य कोर्स होना बहुत जरूरी है। सभी विश्वविद्यालय यहां तक कि टीचिंग लर्निंग सेंटर्स, जो आपके यूनिवर्सिटीज में जेंडर सेंसिटाइजेशन यानी लिंग संवेदीकरण को एक मिशन मोड में लाने का कार्य करते हैं। आपको भी सहयोग करना पड़ेगा। इस पूरी प्रक्रिया में आपकी स्टीरियो टाइप भी टूटेंगे।

समानता और समता में क्या अंतर है?

इक्वलिटी और इक्विटी साथ चलती है यानी समानता और समता साथ चलती है। जैसे कुछ लोग कहते हैं कि आपको ये जॉब करने नहीं दूंगी या दूंगा क्योंकि आप महिला हैं। मैं आपको फाइनैशल अकॉउन्टिग करने को नहीं दूंगी या दूंगा क्योंकि आप महिला हैं या क्योंकि आप पुरूष हैं। लेकिन मै आप दोनों को समान तरीके से और समान नजर से देखूंगी।

इस प्रकार जब आप समता की बात करते हो, दी डिग्री ऑफ फेयरनेस एंड जस्टिस स्पेशल इन दी डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ रीसोर्सेस। अर्थात् विशेष रूप से संसाधनों के वितरण में न्याय और सच्चाई के प्रमाण की बात करते हैं। पर होता क्या है? आप मुझे इक्वल ट्रीट करते हैं लेकिन फेयर ट्रीट नहीं करते। आप मुझे जस्टिस नहीं देते। फिर तो समता गई। समता और समानता अगर साथ नहीं चली तो इनजस्टिस जहां हो रहा है, वहां जेंडर जस्टिस की लड़ाई अधूरी रह जाएगी। समता वो चीज है जहां आप लिंग को ध्यान में रखकर संसाधनों का बराबर बराबर वितरण करते हैं। चाहे आप महिला हो, पुरूष या तीसरा जेंडर।

लैंगिक समानता को मुख्यधारा में लाने से क्या अभिप्राय है?

मुख्यधारा मतलब आपका जो प्रमुख विमर्श है। ये चयनित नही है, ये कोर सब्जेक्ट बनें। जेंडर जस्टिस की बात हर नुक्कड़ और कार्नर में हो। चाहे वो समाज हो, चाहे वो शैक्षणिक संस्थान हो और चाहे परिवार हो। साथ ही वह समाज यौन शिक्षा देने में हिचकिचाये नहीं। वह समाज एक रणनीति जानता हो कि लैंगिक समानता को मुख्यधारा में लाने के लिए। उसके उन्नत्ति और प्रगति की बात करें। तब आप कह सकते हैं की जेंडर मेन स्ट्रीमिंग एस ए स्ट्रेटेजी इस वर्किंग यानी मुख्यधारा में लैंगिक समानता की रणनीति कार्य कर रहा है।

एलजीबीटीक्यू पर आपका क्या राय है?

जब आप जेंडर इकक्लिटी की बात करते हैं तो देखिए जो लोग हाशिए पर हैं, जो मुख्यधारा में नहीं हैं। चाहे वो महिला है, चाहे वो ट्रांसजेंडर, दोनो सम्मान योग्य हैं। आप उनको मुख्यधारा में लाने की बात करें। लैंगिक समानता तब तक नहीं आएगी जब तक पुरूष, महिला और ट्रांसजेंडर तीनों साथ मिल के काम न करें। लोगों में खुद की अपनी समझ हो। न केवल पुरूष और महिला बल्कि ट्रांसजेंडर लैंगिक समानता को जीत सकता है।

लैंगिक समानता में समाज का क्या रोल है?

जेंडर इक्वालिटी भी एक सामाजिक चेतना की आवश्यकता है। यह तभी आएगी जब आप समाजिक जागरूकता की बात करेंगे। आप कोई भी नियम या कानून बना ले लेकिन जब तक सामाजिक चेतना नहीं आएगी वो कानून भी उतना काम नहीं करेगा। हम गांव और कस्बों में नहीं जाएंगे, वहां तक नहीं पहुंचेंगे, वहां पर माइंडसेट्स चेंज नहीं करेंगे। तो कैसे होगा! यह बहुत जरूरी है कि ग्रासरूट माइक्रो प्लानिंग यानी ग्रास रूट लेवल पर प्लान बनाएं। साथ ही जेंडर सेंसिटाइजेशन का पूरा ढांचा खांका तैयार करें। हमें सामाजिक चेतना के लिए उन नुक्कड़ में पहुंचना पड़ेगा जहां उसकी जरूरत है। तब हम कह सकते हैं कि हमने सामाजिक चेतना में अपना योगदान दिया।

लैंगिक आरक्षण क्यो है?

अक्सर ऐसा हमारे परिवेश में बोला जाता है। पर कोशिश होती है कि ऐसी समस्या से हम कैसे बचें। हर बार आप कानून के बारे में सोचे कि हर चीज ज्यूडिशियरी सॉल्व करेगी, यह नहीं होगा। आपको आवाज तो उठानी पड़ेगी। आरक्षण इसलिए दी जाती है क्योंकि आप उस तबके को सुरक्षित महसूस कराना चाहते हो और कोई कारण नहीं है। यह भी सामाजिक चेतना है।

हम पित्तृसत्ता के खिलाफ हैं, मैन्स के खिलाफ नहीं हैं। हमारा शोषण होगा, हमारे अधिकार छीने जाएंगे। यह कथन किस हद तक सच है?

आप जब समान हक मांगते हो तो सामने वाले को लगता है 'ओह माई गॉड'। इसका मतलब मेरे शेयर में से जाएगा, आपके शेयर में से नहीं जाएगा। जब लैंगिक शिक्षा की बात करते हैं तो ये बहुत ज्यादा जरूरी है कि आप पुरूष और महिला के साथ ट्रांसजेंडर को भी सम्मिलित करें। इसलिए मैं कह रही हूं कि ये लड़ाई इस तरह केवल महिला समानता की नहीं है, सबकी है।

हम लैंगिक समानता को खुद से कैसे शुरु करें?

व्यक्तिगत तौर, जब आप घर की बात करते हैं, आप पेरेंट्स की बात करते हैं तो पेरेंट्स को बायोलॉजिकल डिफरेंस का आदर करना चाहिए। जैसे आप खानपान की बात करते हैं, रहन सहन की बात करते हैं तो उसमें समानता होनी चाहिए। आप एक बच्चे के लिए अलग लगाम लगाते हैं कि तुम ये कोर्स कर सकते हो लेकिन तुम नहीं कर सकते। ये प्रोबलमैटिक है। यह तब तक ठीक नही है जब तक आप पेरेंट्स का, टीचर्स का सबका माइंडसेट चेंज नहीं करोगे। इसलिए अभी से शुरू कर देना चाहिए। चूंकि उसी तंत्र में से निकल कर टीचर आ रहा है, उसी तंत्र में से निकल कर पेरेंट आ रहा है अर्थात् जैसे को तैसा।

साक्षात्कारर्ता : **खुशी चौहान**
द्वितीय वर्ष
हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार

Tarang 90.0 F.M.
Community Radio
Ram Lal Anand College
University of Delhi

Gender Champion

Fostering Gender Sensitivity : It Begins With Us

Imagine a world where no one is judged by what they wear, how they walk, who they love, or what they dream of becoming. Sounds ideal, right? But this isn't some distant utopia—it's a world we can build. And it starts with one powerful idea: gender sensitivity.

Now, what does that really mean?

It's about opening our eyes to the everyday differences in how people are treated—at home, in schools, at workplaces, on the streets—simply because of their gender. Often, these differences are so normalised, we don't even notice them. But they're real, and they matter.

Let's start with something as basic as the words we use.

Think about it—how often have we heard phrases like "be a man," "ladkiyon ki tarah mat ro," or "boys don't do that"? These aren't just harmless lines. They carry invisible weight. They teach boys that showing emotion is weakness, and girls that ambition is arrogance. But the truth is—feelings don't have a gender. Neither does strength, or leadership, or kindness.

Gender-sensitive language is inclusive. It says: "It's okay to cry." "It's okay to lead." "It's okay to be you."

But it's not just about how we speak. It's about how we live.

At home—are chores divided equally, or are they still "mummy's job"?

In classrooms—do we encourage boys to explore arts and girls to pursue science?

In offices—are women heard in meetings, or just seen?

And more importantly—are people of all gender identities, including transgender and non-binary individuals, treated with the same dignity as everyone else?

A gender-sensitive society doesn't happen by chance—it's created, consciously.

It's created when a father teaches his son to respect women not just with words, but by how he treats his wife.

It's created when a school tells its students that dreams have no gender.

It's created when an office supports paternity leave and celebrates leadership in all forms.

And yes, laws matter. Policies matter. But they must go hand in hand with awareness. We need safe public spaces. Stronger implementation of rights. And above all, representation—voices from every gender identity at every decision-making table.

But the biggest change? It begins inside us.

It starts when we listen without judging.

When we pause before cracking a "harmless joke."

When we raise our children not as "boys" or "girls," but as good, kind human beings.

Being gender sensitive isn't about perfection. It's about effort. About being willing to grow, unlearn, and stand up for what's fair.

Because in the end, this isn't just a gender issue—it's a human one.

It's about building a world where no one has to dim their light to fit into a box.

Where being different is not a reason to be excluded, but a reason to be celebrated.

Where respect isn't earned through gender roles—it's given freely, to everyone.

And that world? It starts with me. With you. With us.

YUMNA SAMIM
Ram Lal Anand College

गांव की स्त्रियां

गांव की वह स्त्रियां जिनके पास अपना कहने को सिर्फ एक परिवार है,
वह क्या कुछ नहीं करती अपने परिवार के लिए?
कभी अपने पति की लंबी उम्र के लिए वट सावित्री पूजन, तीज और करवा चौथ का व्रत रखती हैं,
तो कभी अपने संतानों की दीर्घायु की कामना करते हुए,
तीन सांझ का निर्जला व्रत रख जितिया का त्यौहार मनाती हैं,
यह वहीं स्त्रियां हैं जिन्होंने कभी अपने लिए कुछ नहीं किया,
ना हीं भगवान से कुछ अपने लिए मांगा,
सिर्फ किया तो परिवार की सुरक्षा के लिए कामनाएं की,
ये महिलाएं सुई धागों से सिर्फ कपड़े नहीं सिलती,
बल्कि सिलती हैं अपने परिवार में आए दरारों को,
ये महिलाएं ऊन का गोला लिए सिर्फ स्वेटर नहीं बुना करती,
बल्कि ये बुनती हैं संबंधों को,
यह संसार की सबसे बड़ी निर्माताएं हैं,
जिन्होंने हमेशा कुछ ना कुछ नव-निर्माण की कामनाएं रखी हैं,
उनके मन में नहीं होता विध्वंस का भाव और ना ही उनके मन में होती है किसी से आगे निकल जाने की चाहत,
यह तो सबको साथ लेकर चलने में विश्वास रखती हैं,
यह महिलाएं किसी के रुतबे देखकर बातें नहीं किया करती,
यह तो बस देख लेती है मुस्कुराहट के मुखौटे के पीछे छिपे हुए अपने जैसे उन सभी महिलाओं की दुःख और पीड़ा को,
यह महिलाएं जज्ब कर लेती हैं हजारों जज्बातों को,
सिर्फ यह सोचकर कि उनका बोलना परिवार के हित में नहीं,
यह वही हैं जिनके सपनों में जिन्हें खुद ही जगह नहीं मिलती,
क्योंकि इन्होंने अपने सपनों में भी अपने पति और संतान की शुभेच्छा को सर्वोपरि रखा,
यह संसार की सबसे बड़ी योद्धा हैं,
जो हर रोज विभिन्न प्रकार की कुरीतियों से लड़ते हुए भी परिवार का निर्माण करती हैं,
इतनी बड़ी संयोगिता होने के बाद भी समाज ने हमेशा इन्हें आश्रिता के रूप में देखा,
काश! किसी ने देखा होता घर के चौखट पर छपी इनकी कलाकारी,
तो शायद ये खुद की काबिलियत से खुद ही महरूम न रहतीं,
लेकिन इस समाज ने कभी भी इनके गुणी होने को स्वीकारा ही नहीं, सराहना तो दूर की बात है!
न ही किसी ने घर की रसोई में बने उन छप्पन भोग के स्वाद को कभी पहचान दिलाने की कोशिश की,
इन महिलाओं ने चूल्हे पर सिर्फ रोटियां ही नहीं सेंकी,
बल्कि इन्होंने उस धधकती ज्वाला में सेंका अपने हजारों जख्मों को,
जो जख्म दिखाई नहीं देते,
यह तो मनोभूमि के पृष्ठ पर उभरे हुए जख्म होते हैं,
जिनसे सिर्फ खून नहीं रिसता, बल्कि रिसता है अश्रुओं का वो खारा पानी,
साड़ी की कोर से उन अश्रुओं को मिटाती ये स्त्रियां
सींचती हैं अपने परिवार की उस बगिया को
जिनमें सिर्फ सब्जियां हीं नहीं उगा करती बल्कि फलता है परिवार का स्वस्थ्य भविष्य,
उन स्त्रियों ने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पण में गुजार दिया,
लेकिन उनके इस बलिदान के बदले उन्हें क्या मिला?
उन्हें मिली स्त्री होने पर लताड़ और समाज का धिक्कार,
बस कुछ नहीं मिला तो वो था स्वछंदता का अधिकार!

शाम्भवी
तृतीय वर्ष
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार

BREAKING THE BOUNDARIES

Gender Equality is not just a phrase- it's a revolution waiting in the hearts of millions. It's the idea that talent, intelligence, and potential should never be bounded by gender. For ages, society has assigned roles based on old rules- rules that say boys must lead and girls must follow, men must earn and women should serve to their families. But times are changing, and with them so must our mindsets should also change.

True gender equality means giving every human the freedom to dream without any labels. If a girl wants to be a scientist, or a soldier she shouldn't have to face raised eyebrows. A boy who wants to be a nurse, an artist or a stay-at-home father then he shouldn't feel shame. It allows everyone to live authentically, to follow passions, and to define success on their own terms. Equality doesn't mean sameness- it means fairness. It's not about replacing one gender's dominance with another, but removing the hierarchy altogether. Gender equality is more than a feminist goal; it's a human goal. It means building a future where every person, regardless of gender, can contribute fully to society and be valued equally for their talents. It breaks stereotypes, promotes shared responsibilities at home, and uplifts communities. When women are educated and included in leadership, economies thrive. When men are allowed to express emotions and choose non-traditional paths, mental health improves and families strengthen. Equality uplifts everyone. Societies where gender equality is practiced have better economies, healthier families, and more inclusive cultures. Empowering women doesn't mean disempowering men- it means removing barriers so all can rise. Gender equality is about making space-for voices,for dreams, for choices.

But this change doesn't happen in silence. It happens when we speak out against the wage gap. When we challenge beauty standards and toxic masculinity. When we question why leadership roles are still dominated by men and why domestic work is still undervalued. Achieving equality takes more than policies- it takes people. It begins in the stories we tell our children, in the language we use, in the opportunities we create. It means calling out injustice, uplifting others, and believing that everyone, regardless of gender, deserves a seat at the table. Let us create a world where gender is not a boundary, but a beautiful part of our identity- one that enhances, not limits, who we can become. True equality isn't about winning a battle between genders. It's about walking forward, hand in hand, towards a future where every human being has the freedom to live, lead and love without any limitations. Let us not wait for change. Let us be the CHANGE. Because a world where gender no longer defines limits is not just possible- it's powerful. And it's worth fighting for.

RIYA GUPTA
BA (H) English
Ram Lal Anand College

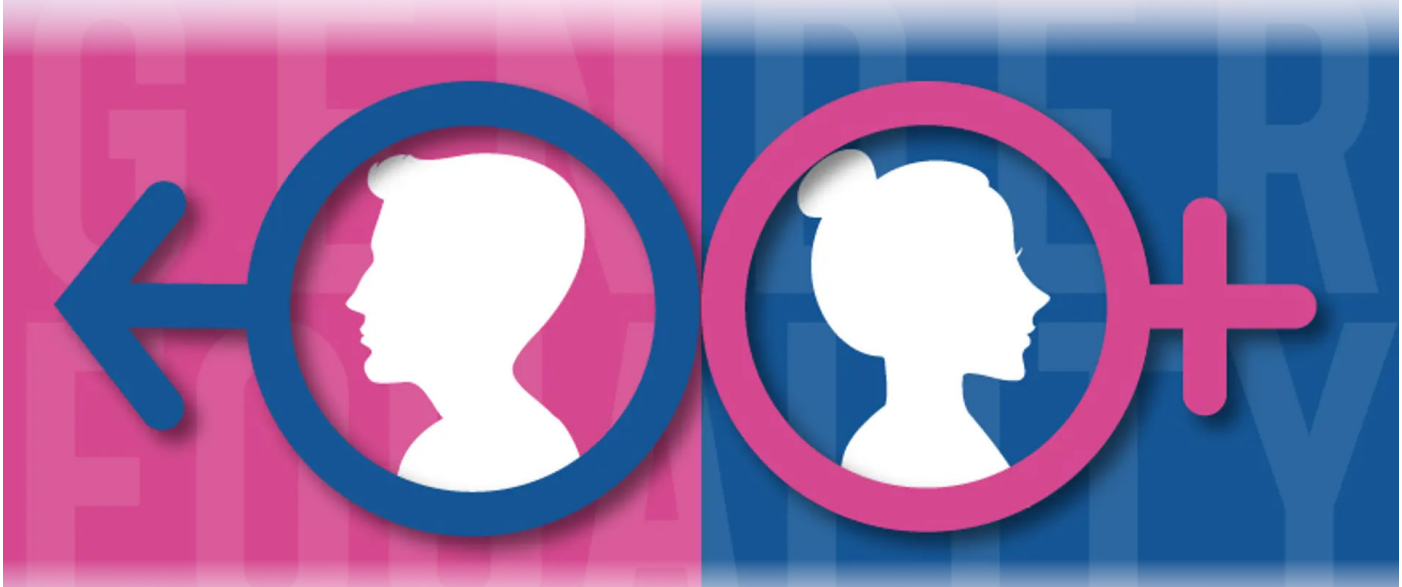

A World Where Everyone is Equal: The Power of Gender Equality

Imagine a world where every person, no matter their gender, has the same opportunities, rights, and freedoms. A world where women and men can pursue their dreams without being held back by outdated stereotypes or biases. This is the world that gender equality can bring.

The Current Reality

Unfortunately, we are far from achieving this vision. In many parts of the world, women and girls face significant barriers to education, employment, and healthcare. They are often expected to conform to traditional roles, limiting their potential and choices. Men, too, can struggle with rigid expectations around masculinity, making it difficult for them to express themselves or pursue careers seen as "feminine."

The Benefits of Gender Equality

So, what would a world with gender equality look like? It would be a world with stronger economies, healthier families, and more inclusive communities. When women and men have equal opportunities, they can contribute fully to society, driving innovation and progress.

Breaking Down Barriers

Education is key to achieving this vision. By teaching children about equality and respect from a young age, we can break down harmful stereotypes and build a more understanding generation. Governments, organizations, and individuals all have a role to play in promoting gender equality. This includes implementing laws and policies that ensure equal pay, protection from discrimination, and access to quality education and healthcare.

A Collective Effort

Achieving gender equality is not just a women's issue - it's a societal one. We all have a role to play in recognizing and removing barriers that limit potential based on gender. By working together, we can create a world where everyone has the same rights and opportunities, regardless of their gender.

A Brighter Future

The benefits of gender equality are clear. It's a fundamental human right and a cornerstone for building a just and progressive society. By striving for a world where everyone is equal, we can create a brighter future for ourselves and for generations to come.

MANSI
B.A (H) English
Ram Lal Anand College

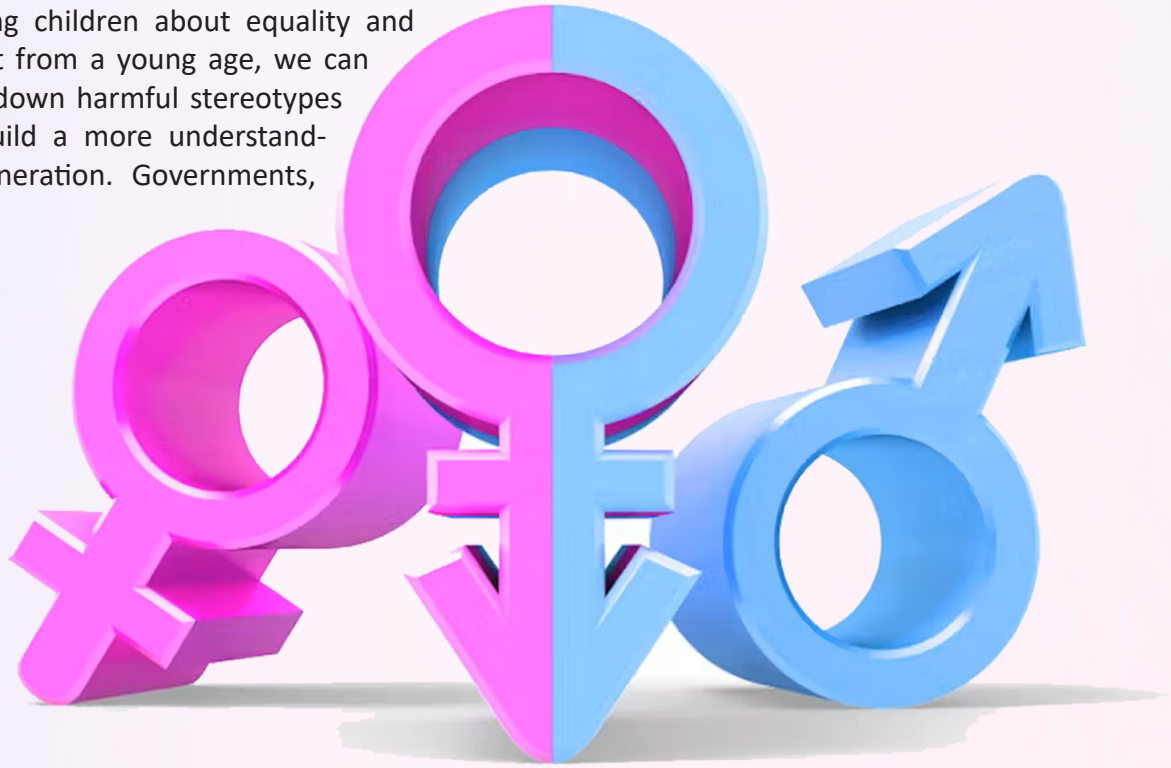

हर क्षेत्र में भेदभाव का द्वेष झेलती महिलाएं

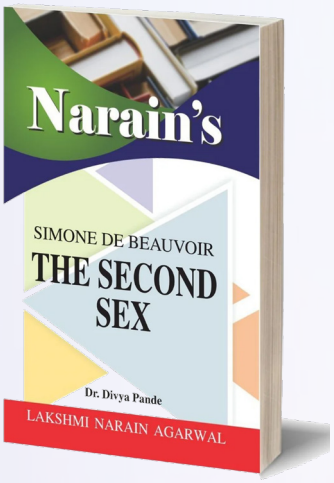

1949 में प्रकाशित हुई एक किताब जिसका नाम 'द से. कंड सेक्स' है। इस किताब की लेखिका सिमोन दी बुआ लिखती हैं- ***"स्त्री पैदा नहीं होती, बना दी जाती है।"*** उनका कहना बहुत हद तक उचित भी है। उनकी यह बात लैंगिक असमानता पर एक जोरदार प्रहार है। क्योंकि जन्म से ही कोई व्यक्ति कुछ साथ नहीं लाता। जो भी भौतिक और प्राकृतिक रूप से वह आत्मसात करता है, उसके पीछे एक बड़ा कारण होता है। प्रकृति तो सबके साथ समान व्यवहार ही करती है। यदि असमानता का भाव किसी ने दिया है, तो वह हम ही हैं और हम ही समाज हैं। वही समाज जो दोहरा बर्ताव करता है।

जब स्त्री समाज की अनुमति क्षेत्र से बाहर जाकर काम संबंध स्थापित करती है, तो वह वेश्या बन जाती है। जबकि पुरूष के लिए वेश्याओं और रखेलों से संबंध रखना शान की बात होती है। यह 21वीं सदी है। जिसमें हम जी रहे हैं और इसी 21वीं सदी में जिसको हम डिजिटल युग के रूप में परिभाषित करते हैं।

जब एक स्कूल की छात्रा मासिक धर्म से गुजरती है, तो छात्रा को षिक्षक के द्वारा पेपर लिखने के लिए क्लासरूम के बाहर बैठा दिया जाता है। यहां मर्दानगी का आशय शक्तिशाली और सर्वेसर्वा होने से है। वहीं इसके विपरीत स्त्रीत्व होने का अर्थ कोमलता और संवेदनशीलता से है। यह कोई मनगढ़ंत वाक्य नहीं बल्कि समाज द्वारा गढ़ी हुई अवधारणाओं पर केंद्रित है। वही अवधारणाएं जिनको स्त्री अपना धर्म मानकर उनके ऊपर चलने के लिए हर स्थिति में विवशता के साथ तैयार रहती हैं और यह आज की कोई नई बात नहीं है। प्राचीन काल से चली आ रही यह कुरीतियों और अवधारणा यथावत् उन पर हावी हैं। भारतीय समाज यानी पुरूष प्रधान समाज ने अपना पौरूष कायम रखने के लिए बराबरी करने वाली स्त्रियों से ईर्ष्या कर उनको आग में जिंदा तक झोंक डाला। मैं यह उदाहरण होलिका दहन के संदर्भ में दे रहा हूं। जहां पुरूषों ने अपने तथाकथित पौरुष को बचाए रखने के लिए समाज की कुरीतियों और आडंबरों से ऊपर उठी एक स्त्री को बेअर्थ कहानी गढ़कर जला दिया था। आज की स्त्रियां उस महान स्त्रीत्व की मूर्ति पर रंग गुलाल लगाकर खुशियां मनाती हैं।

लैंगिक समानता में यदि किसी विचारधारा ने सही कदम उठाया है। तो वह है, बुद्धिस्म की विचारधारा। गौतम बुद्ध की उपस्थिति में जब संघ का निर्माण हुआ तो उस समय स्त्री को वही हक अधिकार मुहैया कराए गए थे। जो एक पुरूष के होते थे। बिना किसी लिंग भेदभाव के संघ में स्त्री पुरूष का जाना मंजूर था। गौतम बुद्ध के महापरिनिर्माण के बाद उसमें कई सारी चुनौतियां और दुराचारी नियमावली ने संघ को भंग कर दिया था। उस समय में जब आडंबरों और दुराचार का दौर था, पुरूष और स्त्री की समानता पर ऐसा काम सराहनीय और कामयाब रहा। लैंगिक समानता किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए नितांत आवश्यक है। यह समाज की निष्क्रिय कोम को सक्रिय बनाएगी। जिससे एक नई क्रांति का उदय होगा।

एक और अन्य बात अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हम बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। इस दिन को कामकाजी महिलाओं के लिए संदर्भित किया गया था। जो महिलाएं घर का कामकाज कर घर से बाहर भी काम करने जाती थी। लेकिन हो क्या रहा है? वे महिलाएं जो पूर्वाग्रहों से ग्रसित हैं और अपने पतियों को ही अपना परमेश्वर मानकर अपने जीवन का वही उद्देश्य मान लेती हैं। वे इस दिन को बड़ी धूमधाम से मनाती हैं। हालांकि वे उस दिन के महत्व से अनजान हैं। उस स्तर पर महिलाओं को पहुंचने नहीं दिया गया, जिनकी वे हकदार हैं।

आज भले लैंगिक असमानता का अनुपात कम हुआ है लेकिन दुनिया में आधी आबादी होने के बावजूद महिलाओं को उनके अधिकार, संसाधन और प्रतिनिधित्व नहीं मिला है। पुरूष अपने वर्चस्व के लिए अपनी सत्ता कायम रखने के लिए युद्ध करता है। सबसे ज्यादा शिकार महिलाओं और बच्चों को होना पड़ता है। बलात्कार, अपहरण, शोषण, उत्पीड़न का दंश महिलाएं झेलती हैं। हालांकि उनकी युद्ध कराने में कोई भी भागीदारी नहीं होती है। लैंगिक असमानता का शिकार एक स्त्री को जन्म से ही होना पड़ता है। खानपान, स्वतंत्रता, समानता सभी चीजों से उसको वंचित होना पड़ता है। भेदभाव झेलना पड़ता है और इसका कारण पुरूष ही है...

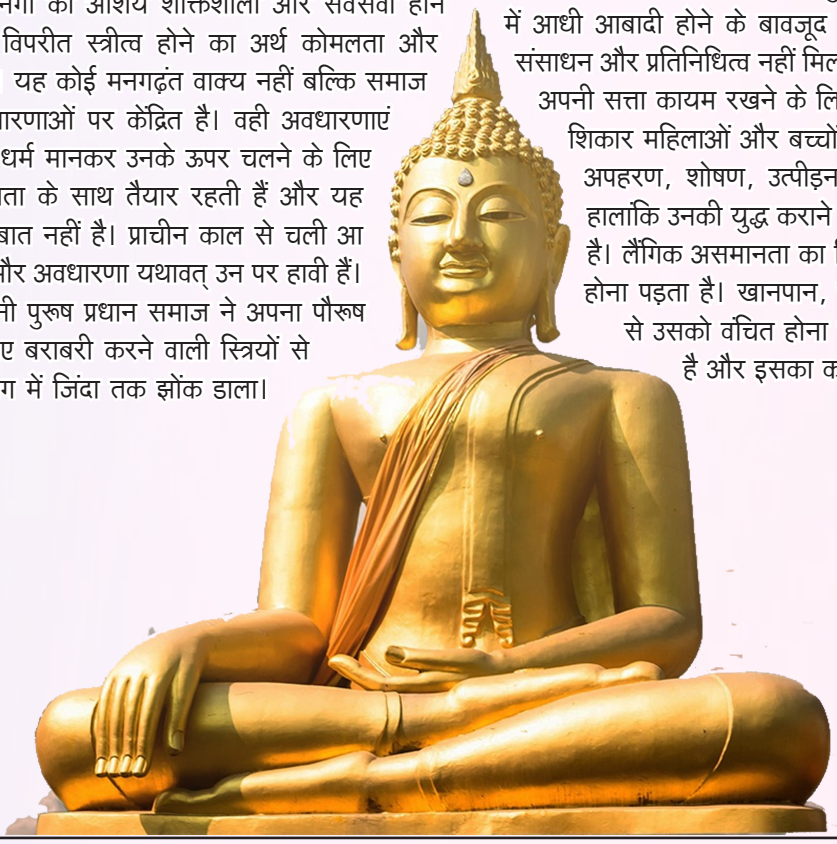

बहरहाल, लैंगिक समानता एक मानव मौलिक अधिकार है और विश्व के हर एक नागरिक के अंदर इसको बढ़ावा देने जैसा मूल कर्तव्य होना चाहिए। दुनिया भर में आधी आबादी महिलाओं की है। इस हिसाब से प्रतिनिधित्व पर भी उनका आधा अधिकार होना चाहिए। संसाधनों पर भी उनका आधा अधिकार होना चाहिए। आज भी यह स्थिति वही है। जहां आज से हजारों साल पहले थी। इस देश में 30 लाख वेश्याएं हैं, जिनमें से लगभग 35 फीसदी वेश्याओं की उम्र 18 साल से कम है, परंतु भारतीय संविधान में तो यह निहित है कि 18 साल से कम उम्र की किसी भी स्त्री के साथ उसकी इच्छा अनुसार या विरोध जताने पर यौन संबंध बनाना बलात्कार के अधीन माना जाएगा। लेकिन यहां संविधान को मानने वाला है कौन? यहां रीति रिवाज और चली आ रही कुप्रथाओं को अहमियत दी जाती है। जो किसी भी राष्ट्र के लिए उचित करार नहीं दिया जा सकता।

बात की जाए थर्ड जेंडर की तो लेखक चिंतक इस विषय पर बात करने से ही डरते हैं। इस विषय को बहुत कम लेखन मिला है और जितना लेखन मिला है या मिलेगा, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वह किसी थर्ड जेंडर समाज से संबंधित व्यक्ति ने तो नहीं ही लिखा होगा। क्योंकि भारतीय समाज में आज की स्थिति इतनी ठीक नहीं है कि कोई थर्ड जेंडर व्यक्तित्व इतना पढ़ लिख पाए और अपनी आप बीती कुछ शब्दों में पिरो सके। इक्का दुक्का कोई समाज से लड़ झगड़ कर, उनका विरोधात्मक रवैया सहन कर समाज की किंवदंतियों को पार कर चुका होगा। इसके बाद भी समाज उसका सहयोग नहीं करता और हर मोड़ पर उसकी टांग खींचने के लिए तैयार रहता है। जब तक ठीक सभी को समान अवसर न दिए जाएं। तब तक यह स्थिति इसी तरह से चलती रहेगी और हम आप इसी तरह संवाद करते रहेंगे। वाद विवाद चलते रहेंगे परन्तु इसमें कोई सुधार नहीं होगा।

सामानता ही विश्व शांति की एकमात्र कुंजी है, चाहे वह जातीय समानता हो, धार्मिक सामानता हो या फिर लैंगिक समानता। मैं इस लेख में एक फिल्म का जिक्र करना चाहूंगा जो वास्तव में नारीत्व के लिए एक उदाहरण है। जिसका नाम है 'दंगल' जिसमें एक ख्याति प्राप्त डायलॉग है कि *"मारी छोरी छोरों से कम है कै।"* आमतौर पर लड़की और लड़के में भेदभाव होता है। कमाल की बात यह है कि आधे से अधिक लोग इस बात से पूरी तरह अनजान रहते हैं कि वे लड़कियों से भेदभाव कर रहे हैं। वे नहीं जानते? क्योंकि किसी ने उनको बताने का प्रयास ही नहीं किया। जब तक किसी को उसकी गलती का एहसास नहीं कराया जाए। संभवतः उसके आचार विचारों में सूक्ष्म भर भी बदलाव नहीं होता।

5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के गुणगान गाने वाले इस देश में लग. भग 75 फीसदी ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं अपनी पढ़ाई आधी अधूरी छोड़ने पर मजबूर हैं। 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' के किताबी नारों से सकारात्मक भाव कैसे आएगा? शहर में ये जो सामाजिक उत्थान के लिए योजनाएं हैं आसानी से लोगों तक पहुंच जाती हैं। लेकिन गांव में इस योजना से कितनी बच्चियां पढ़ पा रही हैं या बच पा रही हैं। इसका कोई सर्वेक्षण हुआ? या योजना की प्रतिपुष्टि? संकोच की बात है कि नहीं हुई! आज भी स्त्री भ्रूण हत्या और बाल विवाह एक बड़ी चुनौती है इस देश के लिए। सरकारों को एक नए सिरे से महिलाओं की शिक्षा के लिए सकारात्मक कदम उठाने चाहिए। क्योंकि जिस राष्ट्र की महिलाओं की स्थिति ठीक नहीं होती। संभवतः वह देश विकसित राष्ट्र तो नहीं बन सकता।

पुष्पेंद्र अहिरवार
तृतीय वर्ष
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार

Rising Like the Sun

She is the whisper in the storm, the strength behind the silence, the fire that dances with grace. Women empowerment isn't just a phrase — it's a revolution wrapped in resilience, stitched into centuries of struggle and triumph.

In every corner of the world, a quiet metamorphosis unfolds. A girl, once told to lower her gaze, now raises her voice. A woman, once confined to four walls, now builds empires, leads movements, and pens poetry that shakes the soul of patriarchy. From villages where education was a distant dream to boardrooms once dominated by suits and silence — the rise of empowered women is not a trend, but a tidal wave.

Empowerment is not about overpowering — it's about awakening. It's in the girl who dares to study under a flickering street lamp. In the mother who reclaims her dreams after years of sacrifice. In the entrepreneur who turns her kitchen into a kingdom. It's the freedom to choose, the right to speak, the power to lead.

But empowerment isn't gifted — it's claimed. With every law changed, every stereotype shattered, every barrier broken, women carve their place in history. Still, it's not just about success; it's about the courage to fail and try again, to fall and still rise. True empowerment lies in unity. When women uplift one another instead of competing. When men become allies, not adversaries. When society stops asking, "Can she?" and starts saying, "She did."

Let's not merely celebrate women on one day or one occasion. Let's build a world where every day is an ode to her strength, intelligence, and unstoppable spirit. A world where she doesn't just survive — she soars.

After all, when you empower a woman, you don't just change her life — you rewrite the future.

LAKSHAY
Ram Lal Anand College

Cover Designing Competition

AKARSH

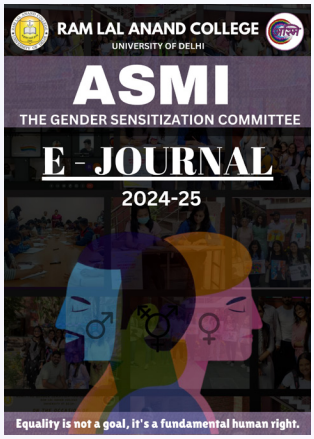

ATHARAV GAMBHIR

HARSH

TUSHAR

HIMANSHU

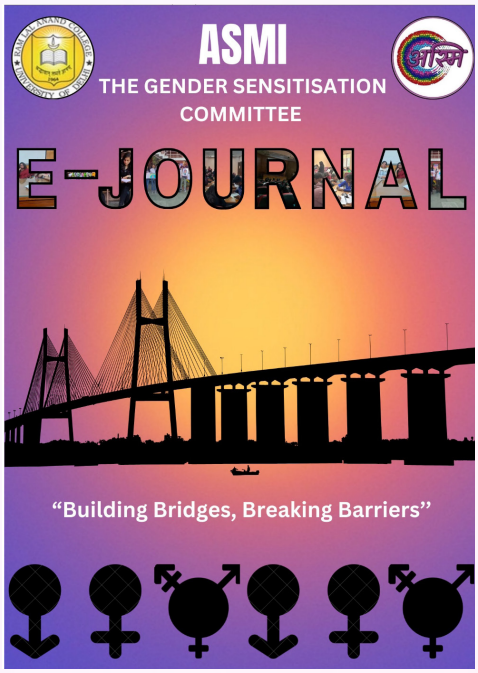

PALAK

LAKSHITA

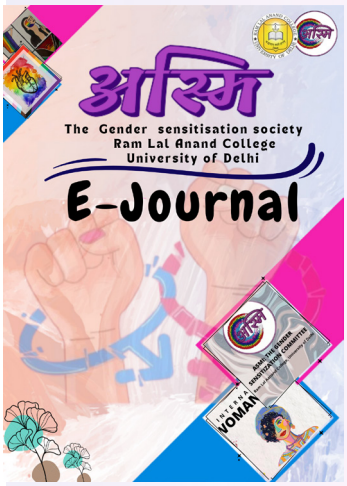

SHIVAM

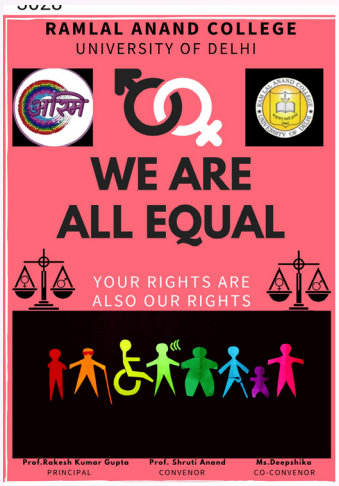

UTSAV RAI

SAUMYA

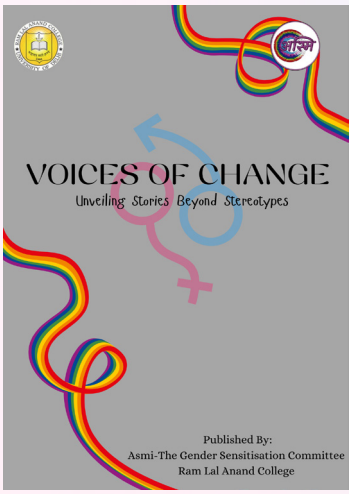

NISHKA

ASMI Report 2024-25

The Gender Sensitization Committee of Ram Lal Anand College conducted a series of purposeful and engaging events during the academic session 2024-2025 with the aim of promoting awareness, dialogue, and student participation around issues of gender sensitivity and equality.

The committee began its activities with an Orientation Program held on 20th September 2024 in the Seminar Room of the college. The purpose of the session was to introduce the newly enrolled students to the Gender Sensitization Committee and to provide an overview of its objectives and functioning.

From 10th to 21st February 2025, the committee, in collaboration with the Women Welfare Advisory Committee, organized a 10-day Self-Defence Workshop. The workshop was designed to empower students with practical techniques and confidence to ensure their safety and well-being. It received enthusiastic participation and positive feedback from the attendees.

On 24th February 2025, the committee organized two competitions as part of the preparatory process for the publication of its annual e-journal. The first was a Creative Writing Competition on the theme "Towards Gender Neutrality," held in the Seminar Room. The competition received 26 entries in both English and Hindi, encouraging students to creatively articulate their thoughts on inclusivity and evolving gender roles. The second was a Cover Designing Competition, which invited students to design the front cover of the journal. A total of 11 participants submitted original artworks that reflected the committee's vision and themes.

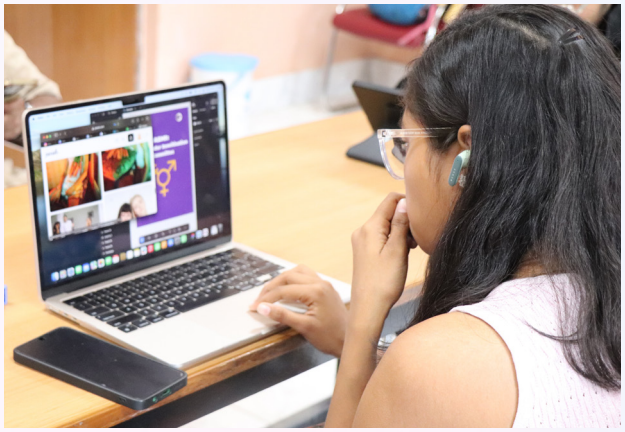

On 25th March 2025, the committee hosted an Author Session on the topic "Understanding Intersectional Discrimination in Gender Discourse through Adivasi and Queer Narratives," in collaboration with Ubiquitous, the English Literary Society. The session featured insightful discussions by Mx. Anureet Watta and Ms. Deepshikha Kumari, who brought critical perspectives to the conversation around overlapping identities and marginalization. The event was intellectually stimulating and well-received by both students and faculty.

A major highlight of the academic year was the celebration of the committee's annual fest – Sweekar'25, organized as a week-long event. The fest commenced with a movie screening of Mrs. on 17th April 2025 in the college amphitheater. The screening was followed by a panel discussion featuring faculty members Mr. Taha Yaseen (Department of English), Dr. Megha Yadav (Department of Economics), and Dr. Sachi Meena (Department of History). The event witnessed an overwhelming turnout, with the amphitheater filled to capacity, reflecting enthusiastic student engagement with the themes explored in the film.

As part of Sweekar'25, the committee also conducted a survey on gender sensitization and organized a quiz competition on 21st April 2025. A total of 11 teams participated in the quiz, which was conducted in two rounds. The first round served as an elimination round, after which the top seven teams advanced to the final round. The quiz promoted awareness and critical thinking on gender-related issues, while also encouraging teamwork and active student involvement.

The fest concluded with a vibrant closing ceremony, which included certificate distribution to the gender champions, team members, and the editorial board, acknowledging their efforts and contributions throughout the academic session. Through these initiatives, the Gender Sensitization Committee has continued its commitment to cultivating a campus environment rooted in equality, inclusivity, and informed discourse. The committee looks forward to carrying this momentum into the upcoming academic year.

Report : ***MEHAK GOYAL & ATHARAV GAMBHIR***

ASMI's Teacher Members

Prof. Shruti Anand
Convenor

Ms. Deepshikha Kumari
Co- convenor

Prof. Neelam Rishikalp
Teacher Member

Dr. Seema Joshi
Teacher Member

Prof. Rajiv Kumar
Teacher Member

Ms. Megha Yadav
Teacher Member

Ms. Minaxi Brahma
Teacher Member

Dr. Ritu Vats
Teacher Member

ASMI
The Gender Sensitization Committee
Ram Lal Anand College, Delhi University
Benito Juarez Marg, New Delhi- 110021

E-Journal Editors

ADITI KESTWAL
Editor (English)
BA(H) English-II

SONIKA
Editor (Hindi)
BJMC-II

AYUSH PRAJAPATI
Editor (Hindi)
BJMC-II

Gender Champions 2024-25

MEHAK GOYAL
BA(H) English-II

ATHARAV GAMBHIR
BA(H) English-II

DIVYA PANDEY
BA(H) History-II

YUMNA SAMIM
BA(H) Pol. Sc.-II

Congratulations to all our Contributors !

We would like to extend our sincere appreciation to all our contributors, who submitted their creative pieces and articles making this e-journal a success. We hope for more successful volumes of Asmi in the coming years and your continued support and submissions. The journal will be available to all in e-Journal form under the publications section of our college's website.

हमारे सभी योगदानकर्ताओं को बधाई !

हम अपने सभी योगदानकर्ताओं को हार्दिक धन्यवाद देना चाहते हैं, जिन्होंने इस पत्रिका को सफल बनाने के लिए अपने रचनात्मक अंश और लेख प्रस्तुत किए। हम आने वाले वर्षों में अस्मि कोऔर अधिक सफल संस्करणों और आपके निरंतर समर्थन और प्रस्तुतियों की आशा करते हैं। यह ई-जर्नल हमारे महाविद्यालय की वेबसाइट के प्रकाशन अनुभाग के अंतर्गत ई-जर्नल के रूप में सभी के लिए उपलब्ध होगी।

RAM LAL ANAND COLLEGE
(Delhi University)
ORIENTATION' 24